चन्दामामा
फरवरी १९९६
5

# REWARD!

BRING 10 DIFFERENT WRAPPER STORIES AND THEIR WRAPPERS TO GET 3 MONOPACKS FREE

SOFT NON STICKY BUBBLE GUM

**HURRY KIDS!**

**OFFER CLOSES 31st MARCH '96**

- Look out for wrapper stories inside Big Babol monopacks only
- Collect the reward from your nearest dealer
- Offer available in select cities

PERFETTI

McCann/PERFETTI/ 895

# ANNOUNCING THE

**The first six books, splendid in their content, press, marking the Golden Jubilee of Chanda**
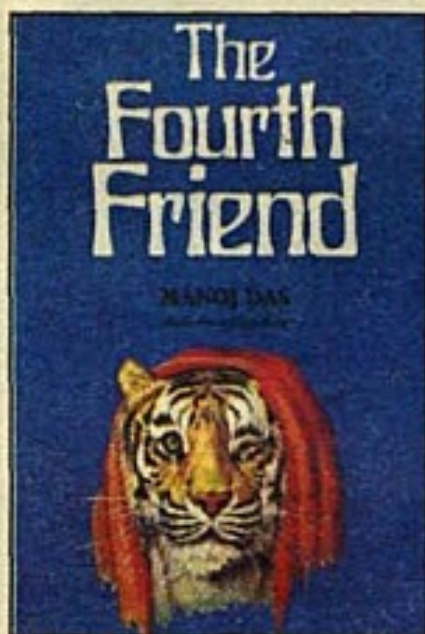
A novelette on three lads befriending an unusual stranger – and their strange adventure, in a village turned into an island by flood.
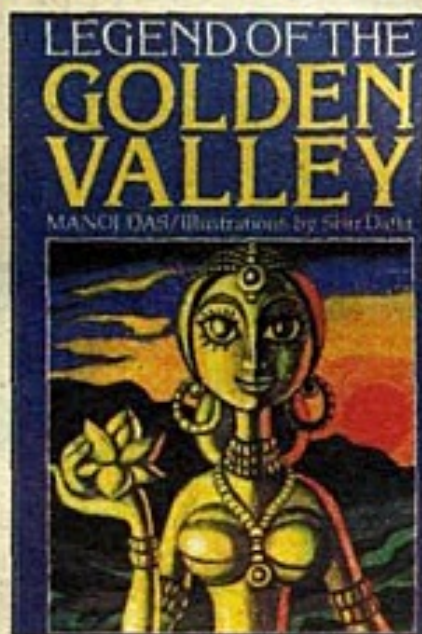
A fairytale novella opening up into fascinating worlds and introducing gripping characters – rich with 42 imaginative illustrations.
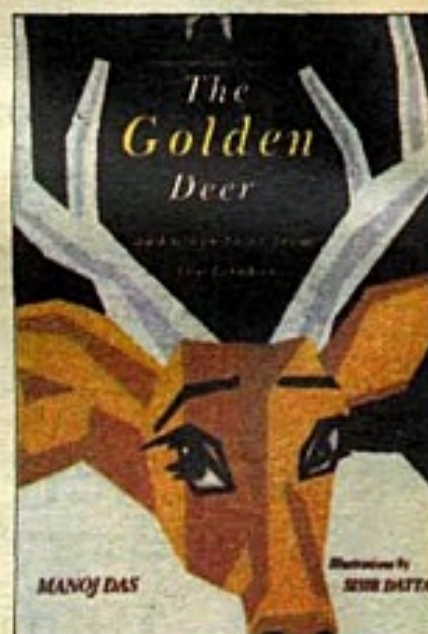
A second selection of stories from the immortal Jatakas, unforgettable for their moral, wit, and wisdom.

**How to get the books at an easy price.**

If you are a subscriber to Chandamama (in any language) between the ages of 6 and 16, you are eligible to the membership of the Chandamama Young Scholars' Club. If you subscribe to Chandamama (in any language) before May 1996, the offer is open to you. You can fill up the form given here on the right side and mail it to us, while sending a token fee of Rs. 50. either by M.O. or by a bank draft drawn in the name of CHANDAMAMA YOUNG SCHOLARS' CLUB. You can then order all or any number of these books at much less than their original price. You get a handy gift of a School Companion Note Book and a decent badge.

What is more, you can participate in talent contests and different activities which the Club proposes to hold in the future.

# CHANDAMAMA BOOKS

illustrations and production–are soon to roll out of the
mama. Written by: Manoj Das. Illustrated by Sisir Datta

A selection of legends and parables, some of which are believed to have been narrated by the Buddha, their radiance even now undiminished.
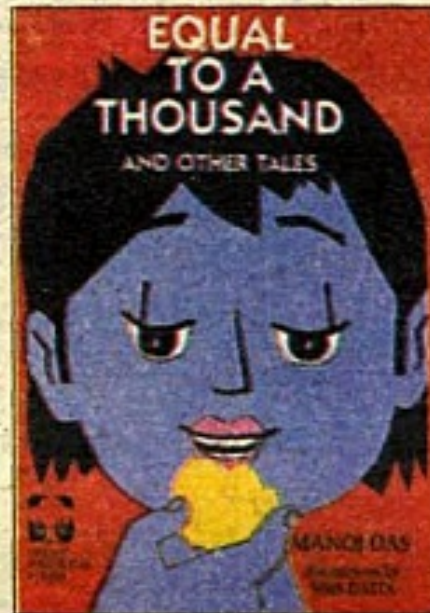
A garland of gems from the great treasure of India's folklore and ancient fiction. Each story has a message, as relevant today as it was ever before.
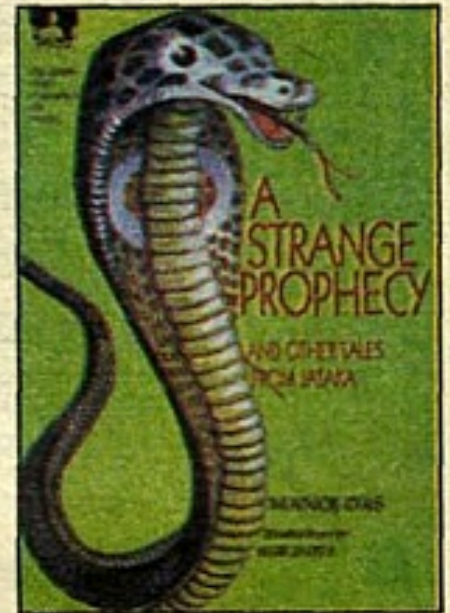
An invitation into the delightful world of ancient tales, legends and parables. Each story enriches us with prudence and helps us understand life better.

**MEMBERSHIP FORMALITIES WILL BE PROCESSED ONLY BY END OF FEBRUARY 1996.**

Dear Sir,

Please enrol me a member of the Chandamama Young Scholars' Club.

My Chandamama subscription No. is,..............................

I am sending my Membership fee of Rs. ...................... by M.O./Draft.
I look forward to my acceptance - gift.

Full Name : ........................................................ Signature

Name of Parents : ........................................................

Mailing Address : ........................................................

Permanent Address : ........................................................

Date of Birth : ........................................................

Class : ...................... School........................................................

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

## लड़कों से समानता

१९९५ वर्ष अभी-अभी जा चुका है। संयुक्त राष्ट्र संघ की परिपाटी के अनुसार यह वर्ष 'बालिका' का वर्ष है। संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसकी प्रमुख शाखा संयुक्त राष्ट्र संघ बाल निधि की स्थापना के हुए पचास साल पूरे हो गये। इस अवसर पर बाल निधि संघ ने संसार की बालिकाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला।

पढ़िये तत्संबंधी दिलचस्प सच्चाइयाँ और आँकड़े-संसार में जहाँ १०० पुरुष हैं, वहाँ औसतन् १०५ स्त्रीयाँ हैं। उन कुछ देशों में से भारत भी एक देश है, जहाँ स्त्रीयों से पुरुष अधिक हैं। यहाँ औसतन् ९३ स्त्रीयाँ है, जहाँ १०० पुरुष हैं। पर केरल में स्त्रीयाँ पुरुषों से अधिक हैं। औसतन् उनकी आयु ७४ साल हैं। उत्तर प्रदेश में स्त्री का जीवन-काल ५४ वर्ष मात्र है। रिपोर्ट के अनुसार जहाँ-जहाँ सुव्यवस्थित योजनाएँ स्त्रीयों के लिए अमल में लायी गयीं, वहाँ-वहाँ उनकी जीवन-पद्धति भी अच्छी रही और साथ ही उनकी आयु भी लंबी रही। बाल-कल्याण क्षेत्र में केरल अन्य राज्यों से बहुत ही आगे है। यहाँ १,००० नवजात शिशुओं में ३२ ही मरते हैं तो असाम में १४२ शिशु मर जाते हैं।

बालिकाओं के बारे में कुछ निर्णयों पर आने के पहले यू.एन.ऐ.सी.ई.एफ़ ने अपनी रिपोर्ट में ज़ोर दिया कि बालिका को अनिवार्य रूप से प्राथमिक शिक्षा दी जानी चाहिये। घर पर ही रहकर घर का काम-काज करने पर उसे विवश करना नहीं चाहिये। रिपोर्ट में बताया गया कि बालिकाओं के माँ-बापों का भय है कि लड़कियाँ अधिक शिक्षित होंगीं तो उनके लिए वर को ढूँढ़ना कठिन हो जाता है।

हम एक और नयी शताब्दी की ओर बढ़ रहे हैं। हमारा प्रयास हो कि लड़कियों को समाज में समुचित स्थान मिले। लड़के और लड़कियों के हक़ जीवन के हर क्षेत्र में एक समान हों।

वर्ष : ४९ फ़रवरी १९९६ अंक : ६

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

चांदामामा
चन्दामामा
चांदोबा
चन्दामामा
CHANDAMAMA

# पोलियो रहित संसार

पोलियो बच्चों को विकलांग बना देनेवाली भयंकर बीमारी है। इस बीमारी के शिकार बच्चों को देखते हुए उनके माता-पिता की मनोव्यथा प्रकट होती है। अनारोग्य भरे वातावरण में बीमारी के कीड़े शरीर में प्रवेश करते हैं, जिससे रीढ़ की हड्डी में सूजन होती है। कीड़े नाड़ी मंडल को चोट पहुँचाते हैं और नसों को काबू में रखने की शक्ति से वंचित कर देते हैं। इस बीमारी के शिकार बच्चों में हाथ-पाँव का उपयोग करने की शक्ति नहीं रह पाती। बताया जाता है कि एक बार इस बीमारी के शिकार हो जाएँ तो इन्हें पुनः स्वस्थ बनाना साधारणतया संभव नहीं है। इसलिए इस बीमारी से बचने का एक ही मार्ग है और वह है - सावधानी बरतें तथा इस रोग को दूर ही रखें।

१९५४ में अमेरीका के जोनास एडवर्ड साक नामक सुप्रसिद्ध मैक्रो बयालजिस्ट ने पोलियो निरोधक टीका का आविष्कार किया। इसे सुई के द्वारा निर्णीत उम्र के अंदर बच्चों के शरीर में प्रवेश करानी चाहिये। इस टीके की वजह से बहुत-से बच्चे पोलियो के शिकार होने से बच गये। उन्होने जान लिया कि इस दवा के द्वारा पोलियो का उन्मूलन हो सकता है। किन्तु इस टीके का कम लोग ही फ़ायदा उठा सके। अधिकाधिक इसे उपयोग में नहीं ला पाये।

कुछ सालों के बाद अमेरीका के ही अल्बर्ट ब्रूस शाबिन नामक एक और मैक्रो बयालजिस्ट ने पोलियो ड्राप्स को खोज निकाला। 'शाबित वाक्सिन' नामक घूँट की यह दवाई लोगों की पहुँच में आ गयी। विविध देशों की सरकारों ने यह दवा मँगवायी और अपने देश के बच्चों के लिए उपयोग में लाने लगीं। इस दवाई की दो घूँटें बच्चों के मुँह में ड़ाली जाएँ तो काफ़ी है, पर यह होना चाहिये, बच्चे के तीसरे साल के पहले ही। साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि एक पद्धति के अनुसार निर्धारित समय पर ही यह दवाई दी जाए।

दो दशाब्दियों के पहले चेचक भयंकर रोग माना जाता था और उसका उन्मूलन करने के लिए भी ऐसे ही प्रयत्न हुए और विजय प्राप्त की। १९९५ के अंत तक लगभग चौदह देशों ने अपने को पोलियो रहित देश घोषित किया। भारत देश भी, कम से कम सत्तर और देशों के साथ पोलियो के उन्मूलन के प्रयत्नों में जुटा है।

संसार भर में पोलियो के जितने शिकार हैं, उनमें से आधे से अधिक रोगी हमारे ही देश में हैं। इस कारण, संसार की दृष्टि हमपर ही केंद्रित है। हमारी सरकार ने भी इस गंभीर स्थिति को जाना और पोलियो के उन्मूलन के लिए कटिबद्ध हो गयी। उसने घोषणा की कि दिसंबर ९ और जनवरी २० ये दोनों दिन राष्ट्रीय पोलियो उन्मूलन दिवस हैं। उसने जनता से प्रार्थना की कि वे अपने तीन सालों से कम उम्र के बच्चों को समीप के आरोग्य शिबिरों में ले जाएँ और पोलियो की दो उचित घूँटें उन्हें दिलवायें। इस दवाई की ज़रूरत है, हमारे देश के ७५० लाख बच्चों को। पिछले दिसंबर ९ को कुछ हज़ारों बच्चों को छोड़कर सबको पोलियो की घूँटें दी गयीं। जनवरी २० को एक और बार यह काम दुहराया जायेगा। दिसंबर ९ को, जिन बच्चों को पोलियो की दवाई दी गयी, उन्हें भी फिर से यह दवाई दिलानी होगी।

सरकार ही नहीं, बल्कि कुछ ग़ैर सरकारी संस्थाएँ भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान पहुँचा रही हैं। इस कार्यक्रम को यदि ऐसे ही उत्साह के साथ और तीन सालों तक अमल में लायेंगे तो हमारा देश भी पोलियो रहित देशों के अंतर्गत आ जायेगा।

इसके बारे में आप भी अपने मित्रों, बंधुजनों, पड़ोसियों तथा माता-पिता को सविस्तार बताइये। संसार से पोलियो के उन्मूलन में अपना सहयोग दीजिये।

# चाह-ज़रूरत

विदेह का राजा रात को बहुरूपिया बनकर नगर में घूम रहा था। ठोकर लगने के कारण वह नीचे गिर गया। सिर और पाँव को चोट पहुँची। एक ग़रीब ने उसे फ़ौरन उठाया और एक पेड़ के नीचे सुलाया। फिर उसने कुछ पत्तों को पीसा और उसे उसके घावों पर पोत दिया।

राजा जल्दी ही ठीक हो गया और उठ बैठा। उस ग़रीब को धन्यवाद दिया और उसके बारे में विवरण जानना चाहा।

"मैं तो ग़रीब हूँ। मेरे बारे में विस्तार से क्या पूछा रहे हैं।" ग़रीब ने कहा।

"विशेषताएँ कुछ नहीं पर इच्छाएँ तो होंगीं ही। बताओ, तुम्हारी क्या-क्या इच्छाएँ हैं। हृदयपूर्वक मेरी इच्छा है कि तुम्हारी वे इच्छाएँ पूरी हों। मेरा आशीर्वाद ज़रूर फलेगा।"

ग़रीब ने कहा "अच्छा, तो सुनो। मैं इस देश का राजा बनना चाहता हूँ।"

"कोई भी धन चाहेगा, कीर्ति चाहेगा, सुख चाहेगा। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि राजा के भाग्य में ये सब नहीं होते।" राजा ने हँसते हुए कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है?" ग़रीब ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा।

"राजा के पास बहुत धन होता है। परंतु वह प्रजा का धन है। कीर्ति भी होती है पर उससे भी अधिक अपकीर्ति होती है। सुख भी होते हैं, पर उनसे भी अधिक जिम्मेदारियाँ होती हैं। इसलिए ये तीनों साधारण मनुष्य को सुख पहुँचाते हैं, राजा को नहीं।" राजा ने कहा।

"तुम्हारा कहा सही लगता है। मैं जिम्मेदारियों से चिढ़ता हूँ। उनका ना होना ही महासुख है। अब रही धन की बात। आज है तो कल नहीं होगा। वह कोई स्थिर वस्तु नहीं है। हर कीर्ति के साथ-साथ

शशि नंदा

अपकीर्ति भी होती है। परन्तु राजा बनने का मेरा उद्देश्य कुछ दूसरा ही है। कोई मेरे समक्ष मेरी प्रशंसा करता रहे तो मुझे बहुत अच्छा लगता है, मधुर लगता है। राजा को लेकर कितने ही काव्य रचे जाते हैं। वह राजा है, इसीलिए उसपर कविताएँ रची जाती हैं। साधारण मनुष्य तो इस भाग्य से वंचित रह जाता है।" ग़रीब ने कहा।

उसकी बातों पर हँसते हुए राजा ने कहा "तो ठीक है। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। तुम्हें मेरा आशीर्वाद प्राप्त है।"

ग़रीब ने ज़ोर से हँसते हुए कहा "पहले तुम सावधानी बरतो और जाओ। फिर से कहीं गिर न जाना। यही दूसरों को आशीर्वाद देने के समान है।" कहकर वह चला गया।

राजा उसके पीछे-पीछे गया। उसकी एक झोंपड़ी थी। उसमें वह अकेले ही रहता था।

दूसरे दिन राजा ने एक कवि को ग़रीब के घर भेजा। उसे देखकर ग़रीब चकित रह गया। उसने पूछा "महाशय, मेरे घर आने का आपका क्या मतलब है?"

कवि ने कहा "तुमपर एक काव्य रचना चाहता हूँ।" "मुझपर काव्य लिखेंगे? ऐसी कौन-सी विशेषता मुझमें है?" ग़रीब ने पूछा।

कवि ने कहा "अपने बारे में सविस्तार बताओ। उनमें से विशेषताएँ ढूंढ़ लूँगा।"
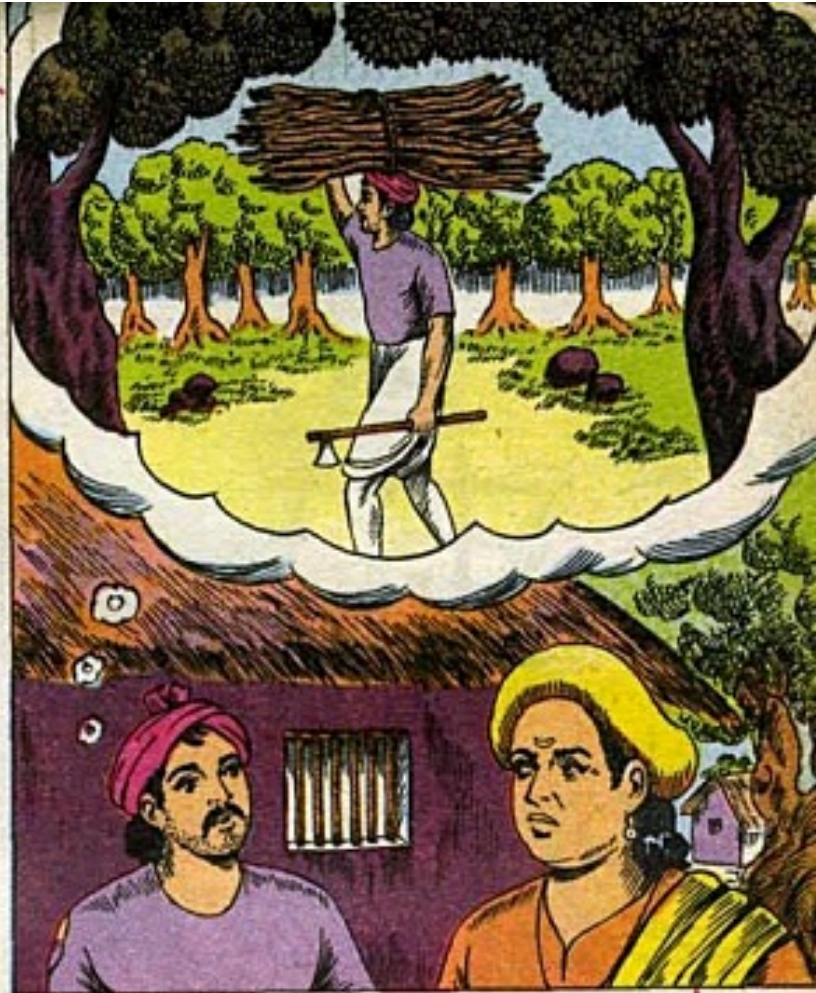
ग़रीब के पैदा होते ही उसका बाप मर गया। दसवें साल में क़दम रखते ही माँ मर गयी। कुछ प्रमुखों ने निर्णय किया कि वह जहाँ रहेगा वहाँ हानि पहुँचेगी। इसलिए उन्होंने उसके लिए एक झोंपड़ी बनवायी और उसे दी। वह जंगल जाता था और लकड़ियाँ चुनकर लाता था। उन्हें बेचकर अपना पेट भरता था।

कवि ने पूछा, "हर दिन जंगल जाते हो। कोई साहस-भरा काम किया ?"

"मुझे एक बार सियार दिखायी पड़ा। ड़र के मारे भागकर चला आया। फिर दो दिनों तक उस तरफ़ गया ही नहीं। ना जाऊँ तो दिन कैसे गुज़रें, इसलिए फिर से जाने लगा।" ग़रीब ने कहा।

"मेहनत करनेवाला हूँ। कुछ पढ़ना चाहूँ तो नींद आ जाती है। मस्त सो जाता हूँ।" ग़रीब ने कहा।

कवि ने झुंझलाते हुए पूछा "तुम्हें पढ़ना आता है?"

"हाँ, हाँ, पढ़ना आता है। काव्य भी पढ़कर समझने की शक्ति रखता हूँ।" गर्व से ग़रीब ने कहा।

कवि ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "यह तो बहुत बड़ी विशेषता है। तुम जैसे ग़रीब में काव्य पढ़कर समझने की शक्ति व अभिरुचि का होना प्रशंसनीय है।"

"अभिरुचि ना हो तो कैसे काम चलेगा। भविष्य में मुझपर कोई काव्य रचेगा तो मुझे समझना भी तो चाहिये ना।" ग़रीब ने कहा।
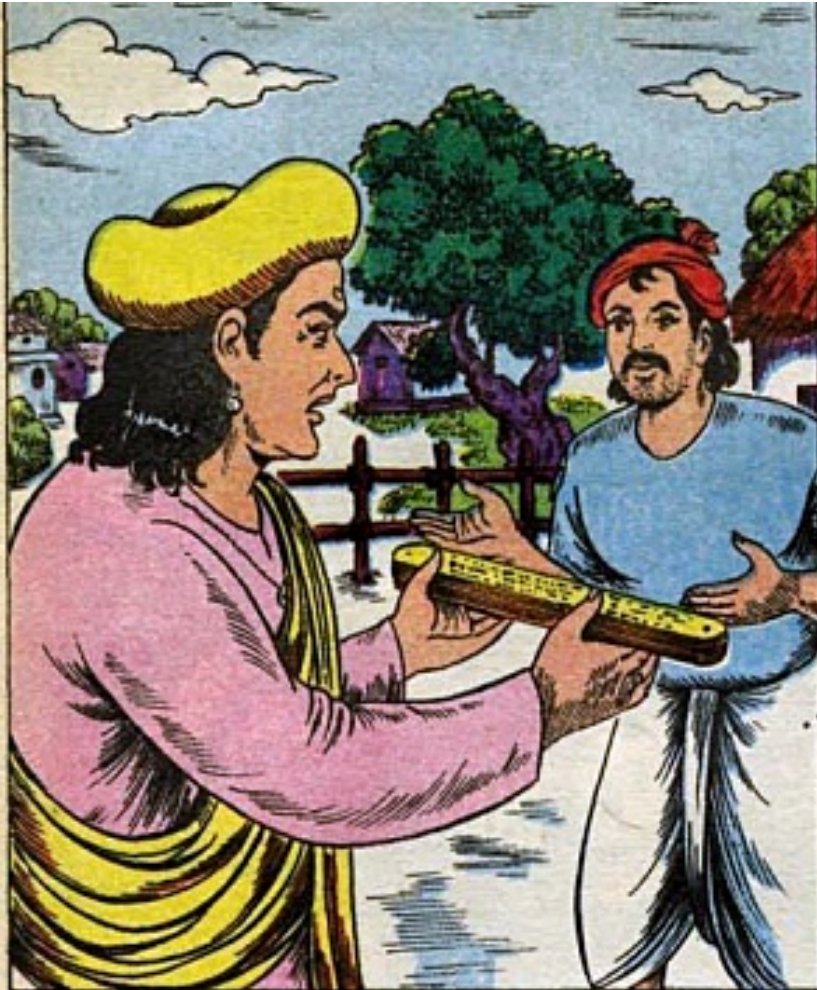
"तुममें दया-धर्म के गुण मौजूद हैं। जो कष्टों में हैं, उनकी मदद तो करते हो ना?" कवि ने पूछा।

इसपर ग़रीब ने लंबी साँस खींची और कहा "मैं खुद तक़लीफ़ों में हूँ। दूसरों की क्या मदद कर पाऊँगा। किन्तु जब फ़ुरसत हो तो मुझसे जितना हो सके, दूसरों की मदद करता हूँ। इसका कारण दया-धर्म का गुण नहीं। सुना कि भगवान बहुरूपिये बनकर आते हैं और भक्तों की परीक्षा लेते हैं। ऐसी परीक्षाओं में क़ामयाब होकर बड़ा बनने की इच्छा रखता हूँ।"

कवि ने पूछा "फ़ुरसत मिलने पर और क्या-क्या करते हो। काव्य-पठन करते हो?"

कवि ऊब गया और बोला "अरे अभागे, तुम हर तरह से भाग्यहीन हो। यह मेरा दुर्भाग्य है कि तुम जैसे दरिद्र पर मुझे काव्य रचना पड़ा" कहकर वहीं का वहीं तालपत्रों पर छोटा-सा खंड काव्य लिखा और उसे देकर चला गया।

ग़रीब ने वह खंड काव्य पढ़ा। उसमें जितनी भी कविताएँ थीं, उसी पर लिखी गयी थीं। हर कविता में ग़रीब की प्रशंसा की गयी थी।

उस दिन से ग़रीब हर रात को अपनी झोंपड़ी के सामने के पेड़ के नीचे एक दीपक को लिये बैठता और गुज़रते हुए हर एक को

कविता सुनाने लगा। वह उनसे पूछता "जानते हो, यह कविता किसपर लिखी गयी? मुझपर। हाँ, मुझी पर।"

जिन-जिन्होंने सुना, कहा "इतनी अच्छी कविता लिखने की शक्ति रखता है, पर तुमपर लिखकर उसने साबित कर दिया कि वह कवि महादरिद्र है। ऐसे कवि को तुमपर कविता लिखनी पड़ी, यह उसकी दुर्गति नहीं तो और क्या है? इस देश का राजा भी इसका जिम्मेदार है।" ये सारी बातें राजा भी सुनता आ रहा था।

एक दिन राजा यथावत् बहुरूपिये के वेष में वहाँ आया, जहाँ ग़रीब रात के समय पेड़ के नीचे बैठा करता था। जान-बूझकर राजा ज़मीन पर गिर गया। किन्तु ग़रीब ने उसे नहीं उठाया। वह पेड़ के नीचे ही बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद राजा आप ही आप उठा और ग़रीब से कहा "इसके पहले मैंने तुम्हें एक बार आशीर्वाद दिया। तुमने जो चाहा, वह पूरा हुआ। अगर मेरी सहायता करते, मुझे उठाते तो तुम्हारी दूसरी इच्छा भी पूरी हो जाती। तुमने मेरी सहायता नहीं की। मेरे आशीर्वाद से वंचित रह गये।"

ग़रीब ने कहा "तुम्हारे आशीर्वाद से मुझे डर सा हो गया।" "क्यों?" राजा ने पूछा।

ग़रीब ने सिर खुजलाते हुए कहा "मैं बेवकूफ़ हूँ, मेरी इच्छा भी बेवकूफ़ी से भरी है। तुम तो अक़्लमंद हो। कोई ऐसा आशीर्वाद देते, जिससे मैं प्रसन्न होता। आराम की ज़िन्दगी गुज़ारता। ऐसा न करके तुमने मेरी इच्छा ही पूरी की। कवि मुझपर क़ाव्य
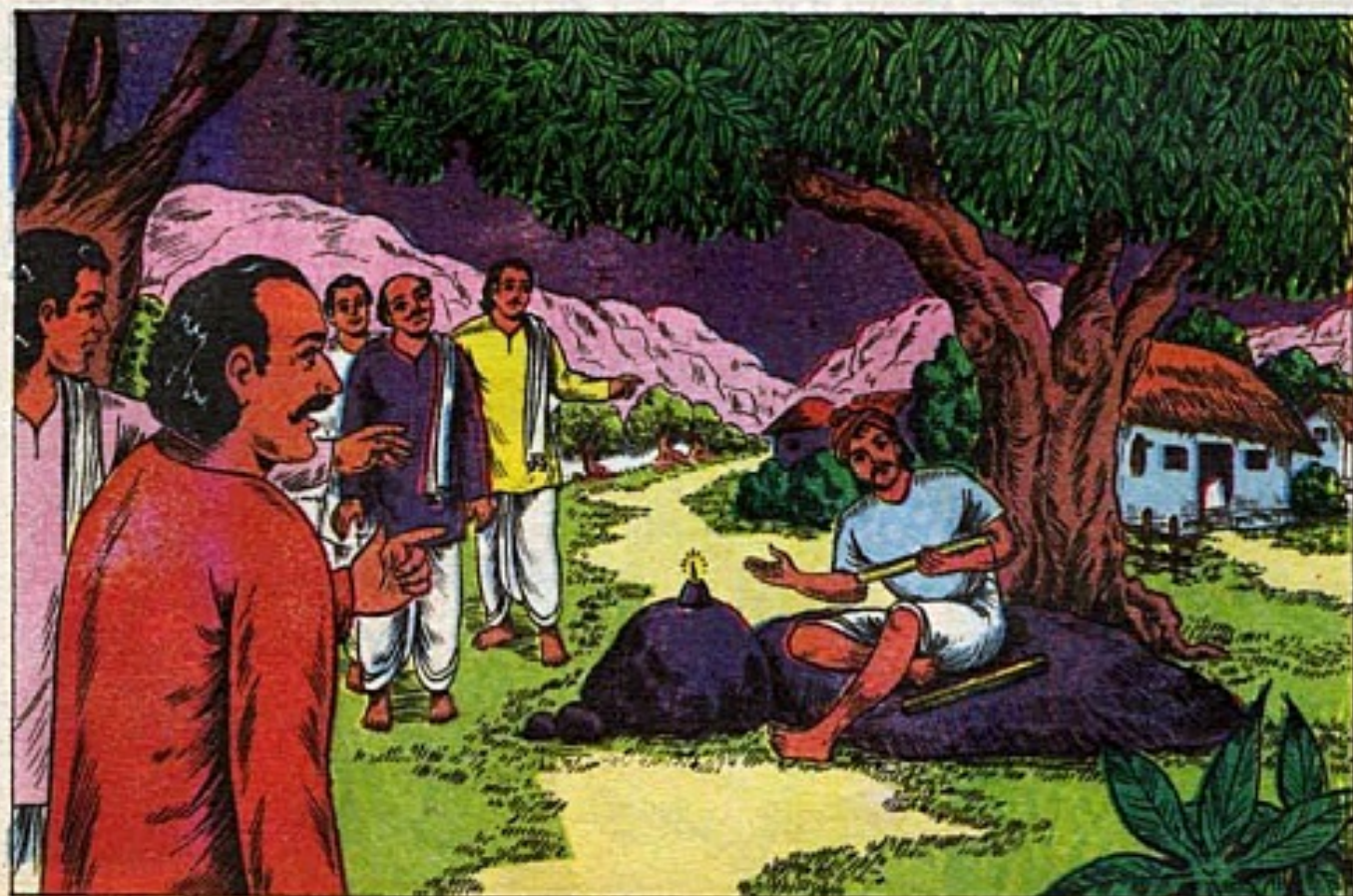
लिखकर चला गया। क्या इससे मेरा पेट भर गया? मेरी ग़रीबी दूर हो गयी? उस काव्य से मेरा क्या लाभ? वह सबको सुनाता हूँ तो वे मेरी बेवकूफ़ी पर हँस रहे हैं। कवि को तथा इस देश के राजा को जी भर के गालियाँ दे रहे हैं। कम से कम कवि भी अपने इस काम से संतृप्त नहीं है। इस अधम काम को करने पर मुझे और अपने आपको कोसता हुआ चला गया। तुम्हारे आशीर्वाद के कारण कोई एक भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं है।''

''तुमने तो उस दिन बातें ऐसी कीं मानों तुम सब कुछ जानते हो। कोई उपयोगी इच्छा प्रकट कर सकते थे'' राजा ने नाराज़ी से कहा।

ग़रीब ने दीनता से कहा ''महाशय, भगवान जानता है कि इच्छाओं के बारे में मनुष्य अनभिज्ञ है। इसीलिए भगवान ने मनुष्य को वही दिया, जिससे उसका भला हो। मनुष्य मृत्यु नहीं चाहता। परंतु सत्य तो यही है कि मृत्यु ही जीवन को अर्थ देती है। मनुष्य रोग नहीं चाहता परंतु आरोग्य-सुख का द्योतक है रोग। मनुष्य दर्द नहीं चाहता। दर्द न हो तो मनुष्य रोग क्या जाने, कैसे जाने, वह उसकी चिकित्सा कैसे कराये?

मनुष्य को अपनी भलाई के बारे में जो कुछ नहीं मालूम हैं, वे सब भगवान ने उसे प्रदान किये। उसने यह सब कुछ किया मनुष्य की सुख-शांति के लिए। तुम्हें भगवान मानकर मैंने तुमसे कुछ पूछा तो तुमने भी मुझे वही दिया। तुममें शक्ति है, तुम्हारे आशीर्वाद में बल है, पर तुम भगवान नहीं हो। तुम्हारे दिये आशीर्वाद के कारण मुझमें उपकार का गुण लुप्त हो गया और दूसरों की सहायता करने की प्रवृत्ति गयी।''

मासूमी से भरी ग़रीब की इन बातों में राजा को चेतावनी सुनायी पड़ी। दूसरे ही दिन उसने ग़रीब को एक पेशा सौंपा, जिससे वह अपने दिन आराम से गुज़ार सके। राज्य के लोगों की इच्छाओं के अनुसार नहीं बल्कि उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सहायता करने लग गया। कालक्रमानुसार राजा विख्यात हो गया और जनता उसे चाहने लगी।

# लुटेरा राजा

बहुत पहले की बात है। विंध्य प्रांतों में छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। उनमें से अलकानंदा नामक राज्य का राजा था अमरसिंह। उसके बीसवें साल की उम्र में ही उसका बाप गुज़र चुका था। पहले से ही उसकी इच्छा थी कि अड़ोस-पड़ोस के छोटे-छोटे राज्यों को जीतूँ और सम्राट कहलाऊँ। परंतु उसकी सेना इतनी बली, विस्तृत व शक्तिवान नहीं थी।

मंत्री धर्मपाल अमरसिंह के विचारों को जानता था। इसलिए कभी-कभी उसे यह कहकर सावधान करता था कि राज्य-विस्तरण की आकांक्षा उचित नहीं। जो राज्य है, उसीको सुचारु रूप से संभालो और जनता को सुखी रखो।

पर, अमरसिंह को मंत्री का यह हित-बोध अच्छा नहीं लगता था। वह मंत्री से कहता "मंत्रिवर, आप देखते रहिये। मैं अपार धन कमाऊँगा, बड़ी-से बड़ी सेना का आयोजन करूँगा, और अड़ोस-पड़ोस के छोटे छोटे राज्यों पर आधिपत्य जमाऊँगा। तब कोई महाराजा अवश्य ही अपनी पुत्री से मुझसे शादी करने के लिए प्रार्थना करेगा।"

अनंत धन-प्राप्ति के लिए उसने एक योजना बनायी। उसका विश्वास था कि यह योजना अवश्य ही सफल होगी। उस योजना के अनुसार उसने अपनी सेना के छोटे-छोटे दल बनाये। उसने उन दलाधिपतियों को आज्ञा दी कि अड़ोस-पड़ोस के राज्यों में जाओ और वहाँ की जनता को लूटो।

गाँवों में होते हुए इन लूटमारों के बारे में जनता ने अपने-अपने राजाओं से शिकायतें कीं। उन्होने कहा भी कि ये लुटेरे अलकानंदा राज्य के हैं। राजाओं ने प्रजा को आश्वासन दिया कि निकट भविष्य में ही इन लुटेरों को रोक दिया जायेगा।

वज्रपुरी राजा इन छोटे-से राज्यों में से एक

सुधीर

राज्य का राजा था। यहाँ की गतिविधियों के बारे में अमरसिंह को बताने के लिए उसने एक दूत को भेजा।

अमरसिंह ने उस दूत का सादर आह्वान किया और कहा "वे लुटेरे आप ही के राज्य को नहीं, मेरे राज्य को भी लूट रहे हैं। मेरे देश में भी वे अत्याचार कर रहे हैं। हमारे राज्य पहाड़ों और जंगलों से घिरे हुए हैं। इसलिए वे अपना काम बेरोकटोक कर रहे हैं। लुटेरों को ख़तम करने का प्रयत्न मैं अपनी तरफ़ से करूँगा। अपने राजा को बताना।"

मंत्री धर्मपाल ने इस बार ज़ोर देते हुए अमरसिंह को चेतावनी दी "महाराज, आपका व्यवहार राजधर्म के विरुद्ध है। किसी दिन अन्य राजाओं को यह सच्चाई मालूम होगी और वे एकत्रित होकर आप पर आक्रमण कर बैठेंगे।"

अमरसिंह ने लापरवाही से हँसते हुए कहा "महामंत्री, डरिये मत ! उनके इकट्ठे हो जाने के पहले ही जो भी धन आज तक मैंने लूटा, उससे एक बड़ी सेना का आयोजन करूँगा और उनपर आक्रमण कर दूँगा। ख़तरे की कोई संभावना नहीं।"

अपने गुप्तचरों के द्वारा वज्रपुरी राजा को निश्चित रूप से मालूम हो गया कि लुटेरों के दलों को भेजनेवाला अमरसिंह ही है। उसने अकस्मात् एक दिन अमरसिंह के क़िले पर धावा बोल दिया। जो भी सैनिक थे, वे दलों से बँटकर जंगलों और पहाड़ों में थे, इसलिए क़िले की रक्षा नहीं हो सकी।

राजा अमरसिंह गुप्त द्वार द्वारा अपने मंत्री के साथ भाग निकला। उसने मंत्री से पूछा "मंत्रिवर, प्राण-रक्षा के लिए हम अब क्या करें?"

मंत्री ने शांत स्वर में कहा "अब आप न ही राजा हैं और न ही मैं मंत्री हूँ। अन्याय की आपकी कमाई पड़ोसी राज्यों पर विजय न पा सकी उल्टे आप पर आपदा ले आयी। अब आपकी जान भी ख़तरे में पड़ गयी। तुरन्त ही आप यहाँ से कहीं भाग जाइये।"

अमरसिंह को अपनी ग़लती महसूस हुई। वह पास के जंगलों की तरफ़ भाग निकला।
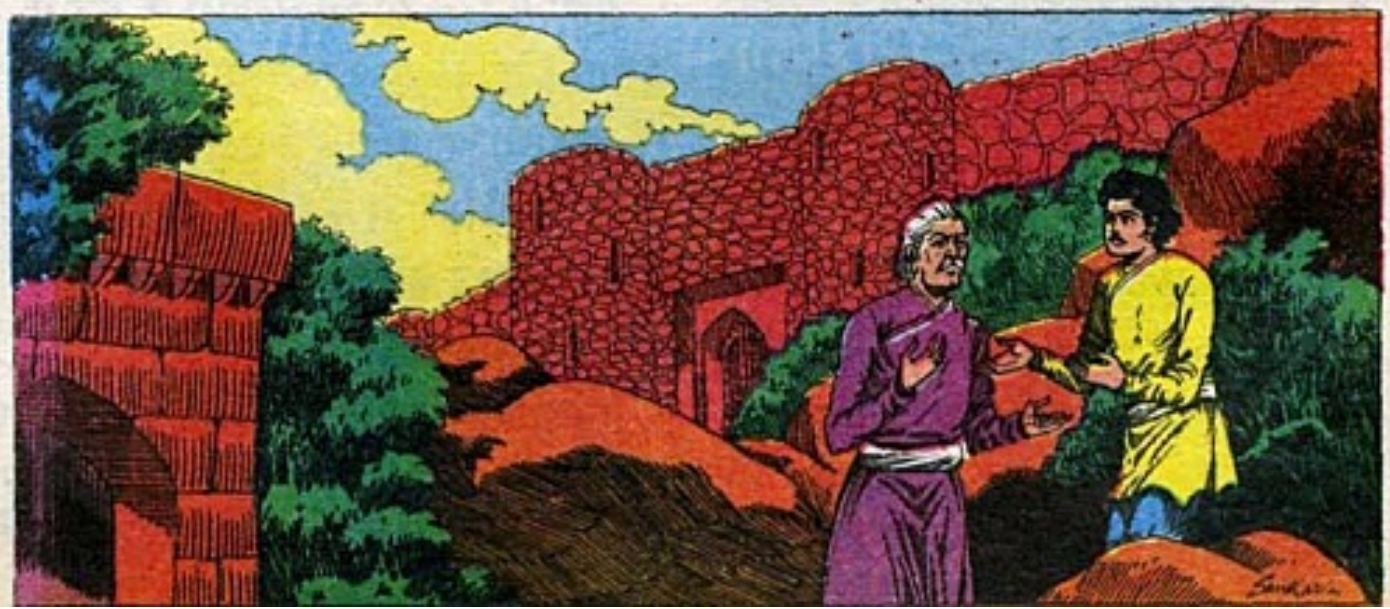
# ६

(प्राण-सहित पितृलोक में जाकर, वहाँ मृत ग्रीक वीरों की कितनी ही प्रेतात्माओं को देखकर, उनसे वार्तालाप करके, सांकेतिक द्वारा आनेवाले अपने कष्ट-सुखों की जानकारी पाकर अपने अनुचरों के साथ रूपधर स्वदेश लौटने लगा। रास्ते में नागकन्याओं से उसने अपने को और अनुचरों को बचा लिया। अब वह उस जगह पर पहुँच गया, जहाँ सूर्य भगवान की पशु-संपदा है। जब उसके अनुचरों ने वचन दिया कि उन पशुओं से हमें कुछ लेना-देना नहीं है तो उसने वहाँ उतरने की अपनी सम्मति दी) -शेष भाग

ग्रीक अपनी नाव बाहर ले आये और एक जगह पर बाँध दी। उसी के पास बहता हुआ पानी का स्रोत भी था। सब उसके पास इकट्ठे हुए और रसोई बनाने लगे। फिर भोजन किया। उसके बाद अपने उन अनुचरों की वे याद करने लगे, जो विध्वंसनी राक्षसी के निवाले बन गये। बातें करते-करते वे सो गये।

उस रात के तीसरे पहर भयंकर आँधी आरंभ हुई। आकाश मेघों से आच्छादित था। दक्षिण से ज़ोर की हवा चलने लगी। ग्रीकों ने अपनी नौका को एक गुफ़ा में सुरक्षित रखा। तब रूपधर ने अपने अनुचरों से बताया "मित्रों, हमारी नौका में पर्याप्त आहार है। हमें भूखा-प्यासा नहीं रहना होगा। इसलिए किसी भी स्थिति में इस द्वीप के पशुओं के पास मत जाना। उनसे सदा दूर ही रहना। वे सूर्यभगवान के हैं।

वे अधभूखे थे।

रूपधर ने निर्णय किया कि देवताओं से प्रार्थना करूँगा। वह अपने लोगों से अलग जाकर एक प्रशांत प्रदेश में आसन लगाकर बैठ गया और प्रार्थना करने लगा। प्रार्थना करते-करते वह सो गया।

उस समय गुफ़ा में मायावी ने अपने साथियों से कहा "मित्रो, आप सब लोगों की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। इसलिए मेरी बात ध्यान से सुनो। प्राणी हर प्रकार की मौत से डरता है, किन्तु सबसे नीच, निकृष्ट मौत है भूख की मौत। आप लोग रत्ती भर भी संकोच मत कीजिये। चलिये, पशुओं को पकड़कर लायेंगे। हम कभी इथाका पहुँच पाये तो वहाँ सूर्यभगवान का एक बड़ा मंदिर बनायेंगे। अब हम यहाँ के पशुओं को लायेंगे, यथावत् स्वर्ग के देवताओं को बलि चढ़ाएँगे और उन्हें खाकर हम अपने को बचायेंगे। फिर भी सूर्यभगवान हमसे गुस्सा हों, और देवताओं की भी हमपर कृपा न हो तो बीच समुँदर में हम डूब जाएँ तो डूबने दो, इस पीड़ा से मुक्त तो हो जाएँगे। इस निर्जन द्वीप में भूख से मरने से अच्छा तो यही होगा कि नमकीन पानी पीकर मर जाएँ।"

मायावी की बातों से बाकी ग्रीक बहुत ही खुश हुए। निसंकोच, निर्भय हो वे अच्छे-अच्छे पशुओं को चुनकर ले आये।

अगर हमसे कोई भूल हो गयी तो समझ लीजिये, सूर्यभगवान के साथ हमने द्रोह किया। ऐसा करने पर हमारे बचने की कोई संभावना नहीं है। आप सब लोग जागरूक रहिये।"

उसके अनुचर भी अकारण मरना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपने सरदार की चेतावनी को ध्यान में रखा और कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे उनकी हानि हो। एक महीने तक आँधी चलती ही रही। नौका में जो आहार था, ख़तम हो गया। उन्हें पक्षियों का शिकार करना पड़ा और पेट भरना पड़ा। मछलियाँ पकड़नी पड़ीं, किन्तु किसी का भी पेट नहीं भरता था।

शास्त्रोक्त उन्हें देवताओं पर बलि दी और उनका मांस पकाने लगे ।

इतने में रूपधर निद्रा से जगा और अपने अनुचरों के पास आने लगा । थोड़ी दूरी पर ही उसने सूँघ लिया कि माँस पक रहा है । उसे मालूम हो गया कि उसके अनुयायियों ने सूर्य के साथ द्रोह किया, विश्वासघात किया । उसने उन्हें बुरा-भला कहा । पर अब क्या फ़ायदा? जो होना था, हो गया । अब पश्चाताप से कोई लाभ नहीं ।

जिन पशुओं को मारकर ग्रीकों ने मांस पकाया था, उसे छे दिनों तक खाते रहे । सातवें दिन आँधी रुक गयी । तुरन्त ही रूपधर और उसके अनुचर नौका को समुद्र में ले आये और निकल पड़े । देखते-देखते वे उस द्वीप से दूर चले गये, जहाँ सूर्य भगवान की पशु-संपदा थी । समुद्र और आकाश के अलावा उन्हें कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था ।

ऐसे समय पर बीच आकाश में एक काला बादल आया । पश्चिम से भयंकर ध्वनि के साथ ज़ोर की हवा चली । लगता था मानों प्रलय हो रहा हो । पाल का स्तंभ टूट गया और वह सीधे कर्णधार के सिर पर जा गिरा । वह मर गया और समुद्र में जा गिरा । इसी समय नौका पर बिजली गिरी । इससे नौका छिन्नाभिन्न हो गयी । रूपधर के सब अनुयायी समुद्र में

गिर गये ।

किन्तु रूपधर को नौका से संबंधित एक स्तंभ मिला । उसका सहारा लेकर डूबे बिना तैरकर जाने लगा । इतने में पश्चिम से चलती हवा रुक गयी और दक्षिण से हवा ने ज़ोर पकड़ा । रूपधर ड़रने लगा कि कहीं यह वायु उसे भँवर में न फँसा दे अथवा राक्षसी विंध्वंसिनी के मुँह में न ड़ाल दे । उसका संदेह सच निकला । सबेरा होते-होते उसके लठ्ठों का बेड़ा भँवर के पास आया । किन्तु भाग्यवश वह उन दोनों खतरों से बच गया ।

रूपधर लगातार इस प्रकार नौ दिनों तक उल्टी हवा के धक्के खाता हुआ समुँदर

में बढ़ता ही रहा। दसवें दिन की रात को ओगीजिया नामक एक द्वीप पर पहुँचा। उस द्वीप में सम्मोहिनी नामक एक देवी गुफ़ा में रहती थी। उस गुफ़ा के चारों ओर का वातावरण बहुत ही सुन्दर और स्वच्छ था। उसके चारों ओर जंगली झाडियाँ थीं। हरा-भरा मैदान था, और जल प्रपात थे। गृह-द्वार पर अंगूर की लताएँ लटक रही थीं। उनमें अंगूर के गुच्छों के गुच्छ थे।

रूपधर ने इस द्वीप में क़दम रखा और जब मुश्किल से आगे, जाने लगा तब सम्मोहिनी उसके सामने आयी। उसने उसका स्वागत किया और गुफ़ा में ले गयी। उसे स्वादिष्ट आहार और स्वच्छ जल पीने को दिया। उसने फिर उससे कहा "अगर तुम मेरा पति बनकर हमेशा के लिए यहीं रह जाओगे तो तुम्हें मृत्यु और बुढ़ापे से मुक्त कर दूँगी।"

उसका तिरस्कार करके कुछ करने की स्थिति में भी नहीं था रूपधर। उसने सम्मोहिनी से विवाह किया और पाँच सालों तक उसी द्वीप में रहा। किन्तु स्वदेश लौटने की इच्छा उसमें प्रबल हो रही थी। मन मसोस कर वह समुँदर के किनारे बैठा रहता था।

सम्मोहिनी ने रूपधर के मनोभावों को अच्छी तरह से जान लिया। वह समझ गयी कि उससे स्वदेश भुलाया नहीं जा सकता। एक दिन उसने कहा "तुम्हें देखकर दया आती है। मैंने तुम्हें भेज देने का निश्चय कर लिया है। चिंतित न होना। उठो, पेड़ों को काटो और लट्ठों का एक बेड़ा बनाओ। तुम्हें यात्रा में जो आहार चाहिए, उसका भी प्रबंध कर दूँगी। कपड़े भी दूँगी और दूँगी अनुकूल वायु भी। उनकी सहायता से घर पहुँच जाना।"

उसकी बातें सुनकर रूपधर का शरीर भय से सिहर उठा। उसने कहा "अवश्य ही इसमें कोई चाल है, धोखा है। नहीं तो तुम क्यों सलाह देती कि मैं इस घोर समुद्र में एक लकड़ी के सहारे चल पड़ूँ। सुदृढ़ नौकाएँ थी जब समुद्र में टूट जाती है, तब

इस काठ का क्या भरोसा। जब तक मुझे पूरी तरह से विश्वास नहीं हो पाता कि तुम हृदयपूर्वक मुझे भेजना चाहती हो, तब तक मेरा यहाँ से जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

"तुम्हारी बुद्धि चालाक है, इसीलिए तुममें संदेह उत्पन्न हुआ। चाहते हो तो क़सम खाऊँगी। तुम्हारी सहायता करने का ही मेरा उद्देश्य है। मुझे इतना कठोर न समझो। तुम्हारी हालत देखकर मेरा दिल दया से पिघल गया।" सम्मोहिनी ने कहा।

वह उसे अपनी गुफ़ा में ले गयी और स्वादिष्ट भोजन खिलाया। फिर उसने कहा "घर लौटने की तुम्हारी इच्छा सहज और उचित है। पर जब तुम्हें मालूम होगा कि घर लौटते हुए तुम्हें कितने कष्टों सें गुज़रना होगा, तब जाने का नाम ही ना लोगे। अपना निर्णय बदल लोगे। मेरी तो सलाह है कि मृत्यु और बुढ़ापे से बचकर यहीं रह जाओ।"

तब रूपधर ने कहा "घर लौटने की मेरी तीव्र इच्छा है। सचमुच मैं इस अवसर की प्रतीक्षा में हूँ। इन प्रयत्नों में मैंने कई कष्ट झेले, कई मुसीबतों का सामना किया। अगर इस बार भी मैं आफ़तों में फँस गया, कहीं मैं बेसहारा भी हो गया तो समझूँगा कि एक और मुश्किल से गुज़र रहा हूँ। मुश्किलों की श्रृंखला में से यह भी एक

होगी। इससे और कुछ होगा नहीं ना? देखो, मैं बहुत ही सहनशील हूँ।"

दूसरे दिन सबेरे ही सम्मोहिनी ने एक पैनी एक कुल्हाड़ी और बसूला रूपधर को दिये और उसके साथ जंगल गयी। वहाँ ऊँचे-ऊँचे पेड़ों का एक समूह था। रूपधर ने बीस पेड़ काटे और उन्हें बसूले से साफ़ करके एक छोटी नौका बनायी। उसके लिए एक पतवार और पाल के एक स्तंभ का प्रबंध किया। पाल के लिए आवश्यक वस्त्र सम्मोहिनी ने दिया। नौका को वह समुद्र में ले आया।

इस काम के होने में चार दिन लगे। पाँचवें दिन सम्मोहिनी ने रूपधर से स्नान

करवाया और यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुएँ दीं। अब वह नौका में पतवार पकड़कर बैठ गया।

उसके लिए अनुकूल हवा चलने लगी। रात को वह बिल्कुल नहीं सोया। नक्षत्रों के सहारे वह नाव चलाने लगा। जब वह निकल रहा था तब सम्मोहिनी ने उससे कहा था कि याद रखो, जब तुम यात्रा करते रहोगे तब इसका ध्यान रखना कि सप्तमहर्षि तुम्हारे बायें हाथ की तरफ़ रहें।

पंद्रह दिनों तक समुद्र में यात्रा करने के बाद फिर से आँधी चली। आकाश में घने बादल छा गये। तीव्र वायु वेग से चलने लगी। रूपधर ने ठान लिया कि उसकी मृत्यु निश्चित है।

"मैं कितना अभागा हूँ। ट्रोय में मरे योद्धा मुझसे बड़े ही भाग्यवान थे। उनके शवों का दहन-संस्कार हुआ। इस बीच समुंदर में अनाथ मर जाऊँगा। ऐसी मौत से अच्छी थी वज्रकाय की मौत। ऐसी मौत भी मुझे मयस्सर नहीं हुई।" यों उसने अपने आप सोच लिया।

उसे लगा कि देवताओं ने उससे बदला लेने की ठान ली है। हवा के धक्कों के कारण पतवार उसके हाथों से छूट गयी। दूसरे ही क्षण नौका गोलाकार में घूमने लगी।

रूपधर पानी में गिर गया। फिर भी उसने अपने को संभाल लिया और पानी से ऊपर आकर अपनी नौका में बैठ गया। लहरों के उतार-चढ़ाव के कारण अब भी नाव गोल-गोल घूमने लगी। गेंद की तरह वह उछल-उछलकर गिर रही थी।

इस समय रक्षकी नामक एक देवी समुद्री पक्षी के रूप में अपनी नाक में एक वस्त्र लिये नौका के कोने पर आ बैठी। उसने कहा "रूपधर, तुम्हें प्राणों का भय नहीं। तुम्हें देवता कष्ट पहुँचा सकते हैं, पर मार नहीं सकते। तुम अवश्य ही घर पहुँच जाओगे, परंतु यह नौका बेकार है, निरुपयोगी है। इस वस्त्र को लो। इसे कमर में बाँध लो और पानी में कूद पड़ो। ऐसा करने पर तुम डूबोगे नहीं। सकुशल

किनारे पर पहुँच जाओगे ।''

रूपधर को उसकी बातों का थोड़ा भी विश्वास नहीं हुआ । उसने सोचा ''और नये-नये कष्टों में डालने के लिए जाल बिछाया जा रहा है । आकाश टूट पड़े तब भी मैं इस नौका को नहीं छोड़ूँगा । इसी में जमकर बैठूँगा ।''

किन्तु कुछ ही पलों में ज़ोर की हवा चली और नाव टुकड़ों में बंट गयी । उसके हाथ एक छोटा-सा खंभा आया । उसपर वह बैठ गया मानों वह घोड़ा हो । रक्षकी के कहे अनुसार ही उसने वस्त्र को कमर में बाँध लिया । वह पानी में उल्टे सो गया और अपने हाथों के बल तैरने लगा ।

उस कोलाहलमय समुद्र में दो दिनों तक तैरता रहा । तीसरे दिन सबेरे आँधी थम गयी । थोड़ी दूर पर उसे किनारा भी दिखायी पड़ा । खुशी-खुशी वह उस ओर बढ़ने लगा । उसे लगा कि उसके कष्टों का अंत होने जा रहा है । पर पल भर में उसने जान लिया कि किनारे पर भी उसकी मौत उसकी प्रतीक्षा कर रही है । वह पूरा तट शिलामय था । समुद्री लहरें उन शिलाओं से टकरा रही थीं । वह ध्वनि उसके कानों को फाड़ रही थी । अगर ये लहरें उसे शिलाओं पर फेंक दें तो उसकी क्या गति होगी ? क्या होगा उसका ?

उसने जो सोचा, वही हुआ । एक ज़बरदस्त लहर उसे लेकर शिलाओं पर ले आयी । उसने एक पथ्थर को कसकर पकड़ लिया । पर उस लहर ने लौटते हुए फिर उसे समुंदर में ला दिया । इस क्रिया में उसके हाथ छिल गये ।

इस बार रूपधर ने तट की ओर नहीं तैरा । तट के चारों ओर तैरने लगा । थोड़े समय तक इस तरह तैरने के बाद उसे एक नदी-मुख दिखायी पड़ा । उसे देखकर उसकी जान में जान आयी । नदी से प्रार्थना करने लगा कि मुझे बचाओ । वह किसी तरह भूमि पर आया और बेहोश होकर गिर गया ।

- सशेष

# दूरी

हेलापुरी से, सुगंधपुर बारह मीलों की दूरी पर है। राजेंद्र को अत्यावश्यक कार्य पर वहाँ जाना था। नौकर के काम पर न आने की वजह से उसे ही घोड़ा-गाड़ी लेकर जाना पड़ा।

गाँव से मुश्किल से दो मील भी नहीं गया होगा, उसने देखा कि बारह साल का एक किशोर चिंतित खड़ा है। राजेंद्र ने उससे पूछा "क्या बात है बेटे, क्यों चिंतित लग रहे हो? कहाँ जाना है?"

"मेरा गाँव यहाँ से दो मील है। यहाँ तक तो पैदल चल आया। और चलना मेरे लिए संभव नहीं। मैं बहुत थक गया हूँ। पैर दुख रहे हैं।" किशोर ने कहा।

राजेंद्र ने कहा "गाड़ी में बैठ जाओ। मैं तुम्हें तुम्हारे गाँव पहुँचाता हूँ।"

दो मील जाने के बाद राजेंद्र ने गाड़ी रोकी और पूछा "कहाँ है तुम्हारा गाँव?"

किशोर ने बताया "और तीन मीलों का रास्ता तय करना होगा। वहीं पड़ता है हमारा गाँव।"

राजेंद्र ने और तीन मील जाने के बाद व्यंग्य भरे स्वर में पूछा "क्या यही तुम्हारा गाँव है ?"

"नहीं, और छे मील जाना पड़ेगा। वहीं मेरे मामा का घर है। जहाँ मैं गाड़ी में बैठा वहाँ से पीछे दो मीलों की दूरी पर मेरे माँ-बाप रहते हैं। आप सच मानिये, मैंने कोई झूठ नहीं बोला।" किशोर ने कहा।

उसकी बातें सुनकर राजेंद्र उसकी चालाकी पर हक्का-बक्का रह गया। -मुरली
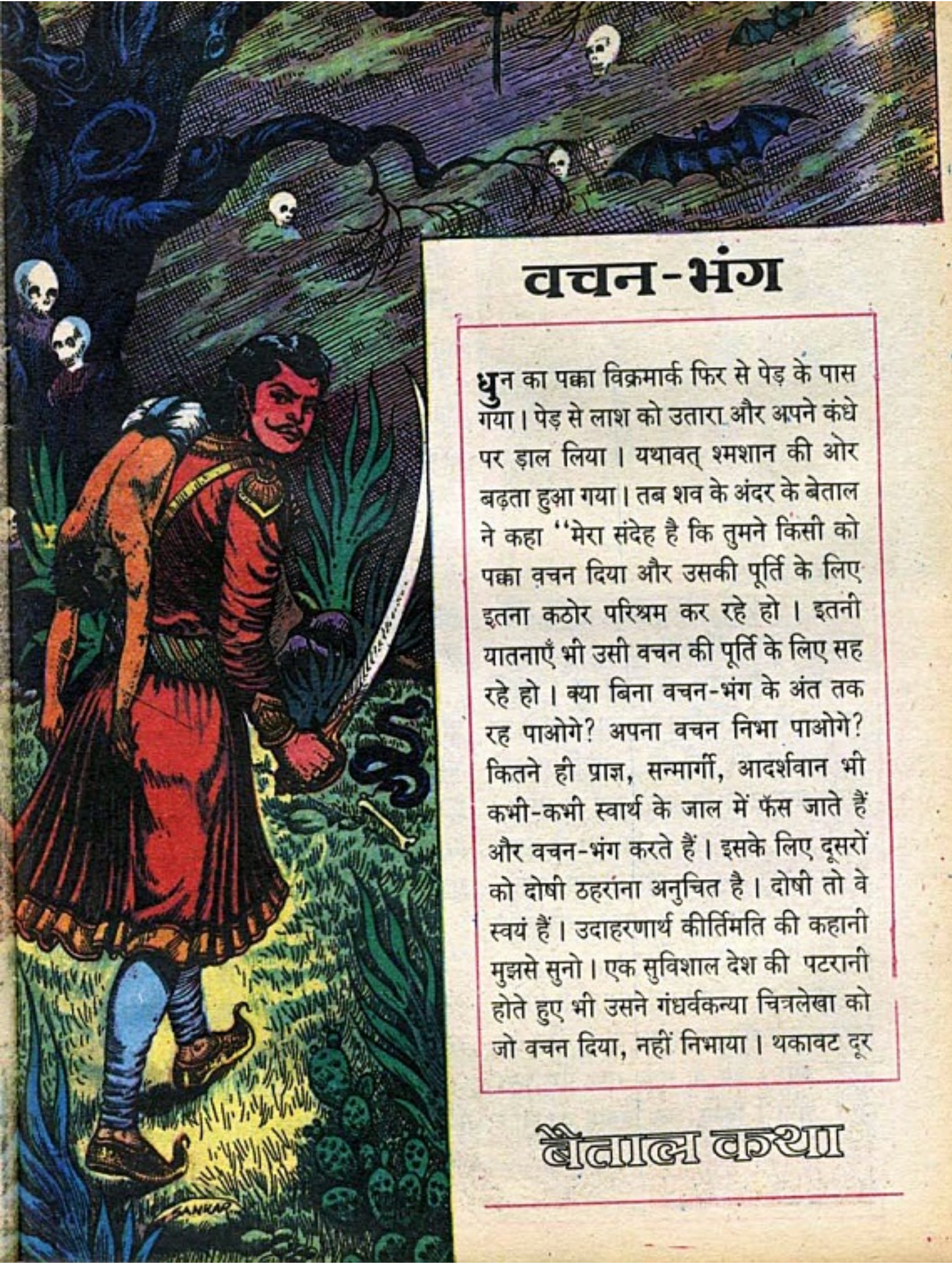
# वचन-भंग

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से लाश को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "मेरा संदेह है कि तुमने किसी को पक्का वचन दिया और उसकी पूर्ति के लिए इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो। इतनी यातनाएँ भी उसी वचन की पूर्ति के लिए सह रहे हो। क्या बिना वचन-भंग के अंत तक रह पाओगे? अपना वचन निभा पाओगे? कितने ही प्राज्ञ, सन्मार्गी, आदर्शवान भी कभी-कभी स्वार्थ के जाल में फँस जाते हैं और वचन-भंग करते हैं। इसके लिए दूसरों को दोषी ठहराना अनुचित है। दोषी तो वे स्वयं हैं। उदाहरणार्थ कीर्तिमति की कहानी मुझसे सुनो। एक सुविशाल देश की पटरानी होते हुए भी उसने गंधर्वकन्या चित्रलेखा को जो वचन दिया, नहीं निभाया। थकावट दूर

बैताल कथा

करते हुए जाओ और कहानी सुनते रहो'' बेताल ने आगे यों कहा।

चंद्रधर कुँदनदेश का राजा था। उसकी पटरानी थी कीर्तिमति। वह उसकी माँ के दूर के रिश्तेदार की पुत्री थी। उसकी माँ उसे उसके बचपन में ही अपने यहाँ ले आयी। उसने वचन भी दिया था कि उसे मैं अपनी बहू बनाऊँगी। बड़े ही प्यार से उसे पालने-पोसने लगी। इतना प्यार शायद उसने अपने बेटे से भी नहीं किया होगा।

चंद्रधर और कीर्तिमति बचपन से मिल-जुलकर रहते थे। इस कारण उनके बीच प्रेम बढ़ता गया। उम्र के साथ-साथ प्रेम घना होता गया। किन्तु जब विवाह की बात उठी, कीर्तिमति ने अपनी विमुखता दिखायी। इसका प्रबल कारण था, उन दोनों के रूपों की स्पष्ट भिन्नता। चंद्रधर बहुत ही सुँदर युवक था। अद्भुत लगनेवाला सम्मोहक उसका रूप था। पर कीर्तिमति का रूप साधारण था। उसमें कोई विशेष आकर्षण नहीं था।

मनमोहक, छविपुँज, अद्भुत रूपवान चंद्रधर एक साधारण युवती कीर्तिमति से विवाह करनेवाला है। इस विषय को लेकर उसकी परिचारिकाएँ आपस में कानाफूसी करने लगीं। कहने लगीं कि अपनी माँ के वचन को निभाने के लिए चंद्रधर, कीर्तिमति से विवाह कर भी ले, पर भविष्य में वह अवश्य ही गंधर्व कन्या जैसी किसी सुन्दर कन्या से विवाह करेगा।

कीर्तिमति ने उनकी टीका-टिप्पणियाँ एक दो बार सुन भी लीं। इसपर उसे बहुत दुख भी हुआ। उससे सहा नहीं गया और आख़िर एक दिन चंद्रधर से कह ही दिया कि मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ। अच्छा यही होगा तुम किसी सुँदरी से शादी रचाओ।

इसपर चंद्रधर ने मुस्कुराते हुए कहा ''कीर्ति, विवेकहीन कुछ मूर्ख हमारे बारे में अंटसंट बक रहे हैं तो बकने दे। काल ही उन्हें सही समाधान देगा।''

चंद्रधर की इन बातों से कीर्तिमति के सब संदेह दूर हो गये। कुछ दिनों के बाद उनका

विवाह भी संपन्न हुआ। वे आनंद से दांपत्य जीवन बिताने लगे। किन्तु विवाह के चंद सालों के बाद भी जब कीर्तिमति माँ नहीं बन पायी तो धीरे-धीरे उसमें असंतोष की भावना तीव्र होती गयी।

इन परिस्थितियों में पूर्णिमा के दिन पति-पत्नी जब नौका-विहार कर रहे थे तब आकाश-मार्ग से गुज़रती हुई चित्रलेखा नामक एक गंधर्व कन्या ने उन्हें देखा।

चित्रलेखा, विद्युन्मय नामक राजा की बेटी थी। गंधर्व लोक में असमान सौंदर्य राशि कहलाती थी। उसकी सुँदरता का बखान करते हुए गंधर्व नहीं थकते थे। वह किसी गंधर्व पुरुष से विवाह करने को तैयार नहीं थी, क्योंकि उसकी दृष्टि में इस योग्य कोई गंधर्व युवक के लिये था ही नहीं। उसने जब तेजस्वी व अतिसुँदर चंद्रधर को देखा तो उसपर मोहित हो गयी। वह मन ही मन उसकी सुँदरता की वाहवाही करने लगी। फ़ौरन अदृश्य रूप में उन्हीं के साथ-साथ रहने लगी। उसे मालूम हो गया कि ये राजदंपति हैं और संतान ना होने के कारण बहुत ही क्षुब्ध हैं।

चित्रलेखा उस समय लौट तो गयी, पर एक दिन चंद्रधर जब उद्यानवन में अकेले टहल रहा था, तब उसके सम्मुख प्रत्यक्ष हुई। उसने अपने बारे में बताया और उससे प्रार्थना की कि मुझसे विवाह कर लो। चंद्रधर, इस

अप्रत्याशित घटना से आश्चर्य में डूब तो अवश्य गया, पर बड़े ही कोमल स्वर में उसने उस प्रस्ताव का तिरस्कार किया।

फिर भी चित्रलेखा ने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। वह एकांत में कीर्तिमति से मिली। उसने सविस्तार अपनी इच्छा तथा चंद्रधर के तिरस्कार का पूरा विवरण दिया और उससे कहा "चंद्रधर तुम्हें बहुत चाहता है। इसी कारण मुझ जैसी अतुल्य सुँदरी का भी तिरस्कार किया, मेरी इच्छा भी ठुकरा दी और तुम्हारे ही संग अपना जीवन बिताने पर तुला हुआ है। उसका निर्णय अटल लगता है। सौदर्य की बात रहने दो। बताओ, तुम्हारे कारण वह निसंतान रहे, क्या यह तुम्हें उचित

लगता है?''

चित्रलेखा की बातों से कीर्तिमति के दिल को अवश्य ही ठेस पहुँची किन्तु दृढ़ स्वर में उसने पूछा ''पहले तुम यह बताओ कि ये सारी बातें मुझे सुनाने का तुम्हारा क्या मतलब है?''

चित्रलेखा ने कहा ''अकारण भला मैं ऐसी बातें क्यों करूँगी। अगर तुम अपने पति का सुख चाहती हो, तुममें स्वार्थ ना हो तो तुम्हें चाहिये कि अपने पति का विवाह मुझसे कराओ। उसे समझा-बुझाकर उसकी सम्मति लो। तुम्हीं देखोगी कि एक वर्ष के होते-होते वह मुझसे और मेरी संतान से वह कितने आनंद से रहने लगेगा। यह न समझना कि मुझसे विवाह करने मात्र से वह तुम्हारी परवाह ही नहीं करेगा उल्टे तुम्हारे त्याग-गुण से प्रसन्न होकर तुम्हारा आदर करेगा। तुम्हारी निस्वार्थता पर तुम्हारी प्रशंसा करेगा। उसकी दृष्टि में तुम महान बन जाओगी।''

कीर्तिमति बहुत समय तक मौन रही। फिर कहा ''तब मेरी एक शर्त है।''

चित्रलेखा ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा ''कहो, क्या शर्त है?''

''आज चैत्र बहुलपंचमी है। आज से लेकर ठीक एक साल तक की मुझे अवधि दो। आनेवाले चैत्र बहुलपंचमी के दिन तक भी अगर मैं माँ नहीं बन सकी तो भरसक कोशिश करूँगी कि तुम्हारा विवाह चंद्रधर से हो। यह मेरा वचन है।'' कीर्तिमति ने कहा। चित्रलेखा 'हाँ' कहकर चली गयी।

एक दिन कीर्तिमति, देवी की पूजा करके लौट रही थी तब मंदिर के एक कोने में बैठे वृद्ध साधु ने हाथ उठाकर इशारा करते हुए उसे अपने पास आने को कहा।

कीर्तिमति साधु के पास आयी और सविनय प्रणाम किया। साधु ने मुस्कुराते हुए आशीर्वाद दिया और पूछा ''संतान के न होने का तुम्हें बड़ा दुख है। है ना?

कीर्तिमति ने हाँ के भाव में अपना सिर हिलाया। ''ज़रा अपनी हथेली दिखाना'' कहते हुए उसने उसका बायाँ हाथ देखा और रेखाओं का परिशीलन करते हुए कहा ''तुम्हारे

हाथ में संतान की कोई रेखा ही नहीं है। परंतु, संतान-रेखा के न होते हुए भी तुम्हारा भविष्य उज्वल दीख रहा है। क्या एक काम कर सकोगी?''

कीर्तिमति ने कहा ''बताइये, मुझे क्या करना है?''

''तुम्हें मालूम ही होगा कि इस देश की उत्तरी दिशा में विद्रुम पर्वत पंक्ति है। इस पंक्ति के ठीक अर्ध भाग में एक छोटी सी घाटी है। उस घाटी की ओर जाओगी तो व्योमकेश महर्षि का आश्रम दीखेगा। वे बड़े महात्मा हैं। तुम अपने पति को लेकर ठीक चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन प्रात:काल वहाँ पहुँच जाओ। उनके यहाँ जाकर उनसे कहना कि शरात्कर ने हमें यहाँ भेजा है। तब वे ही बतायेंगे कि तुम्हें क्या करना होगा।''

साधु की बातों से कीर्तिमति में आशा जगी। उसने कहा ''स्वामी, ऐसा ही करूँगी। हम दोनों वहाँ अवश्य जाएँगे।'' उसने साधु को सविनय प्रणाम किया और लौट पड़ी।

उस दिन रात को उसने अपने पति से साधु की बातें सविस्तार बतायीं और कहा ''यह मेरे लिए आख़िरी अवसर होगा। मेरी आशा है कि इस बार अपने भाग्य को आजमा लूँ। आप सहयोग दें तो'' आगे वह कुछ और ना बता सकी और मौन रह गयी।

पत्नी के उद्वेग को समझकर चंद्रधर ने कहा ''कीर्ति, हम पति-पत्नी हैं। सुख-दुख को समान रूप से हमें बाँटना है। तभी हमारा जीवन समतल मार्ग पर जा पायेगा। यह तुम्हारी ही चाह नहीं, बल्कि मेरी भी है। कष्ट झेलकर ही सही, वहाँ जायेंगे।''

फिर साधु के कहे अनुसार, कीर्तिमति और चंद्रधर निकल पड़े। चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन सबेरे-सबेरे उस घाटी में पहुँचे। वे व्योमकेश महिर्षि के आश्रम में आये। वृद्ध, दयालू महिर्षि ने बड़े प्रेम से उन दोनों का स्वागत किया और उनका कुशल-मंगल पूछा।

चंद्रधर ने अपनी संतानहीनता की बात उनसे बतायी। और उसने मंदिर में साधु शरात्कर से कीर्तिमति के मिलने की घटना का भी विवरण दिया।

तब व्योमकेश ने कहा "पुत्र चंद्रधर, ज़रा अपना दायाँ हाथ दिखाना।"

महर्षि ने कुछ क्षणों तक ध्यान से हथेली की रेखाओं का परिशीलन किया और कहा "तुम्हारी रेखाओं में संतान की कोई रेखा है ही नहीं। किन्तु शरात्कर ने जैसी कल्पना की, कोई अद्‌भुत चमत्कार हो सकता है।"

"अद्‌भुत चमत्कार" कहते हुए राजदंपति आश्चर्य में डूब गये। "सुनो, तत्संबंधी विवरण मुझसे सुनो।" व्योमकेश ने आगे यों कहा।

"यहाँ से ठीक तीन कोस की दूरी पर एक शिवालय है। उस मंदिर में बड़ा ही पुराना आम का एक पेड़ है। उस पेड़ में साल में एक ही फल फलता है। कोई व्यक्ति किसी इच्छा को लेकर, संपूर्ण विश्वास लिये भगवान की प्रार्थना करे और अंजलि फैलाकर उस पेड़ के नीचे खड़ा हो जाए तो वह इच्छा अगर न्याय-सम्मत हो, धर्मसम्मत हो तो वह फल सीधे उस व्यक्ति की अंजलि में आ गिरेगा। अगर उसकी इच्छा धर्मसंगत न हो तो वह फल अंजलि में न गिरकर धरती पर गिर जायेगा। ऐसे फल को खाने पर कोई फल नहीं होता। फल अंजलि में गिरने पर अवश्य ही इच्छा की पूर्ति होती है। रात को चंद्रोदय के समय वहाँ जाइये और अपने भाग्य को आज़मा लीजिये।"

महर्षि की बातों से कीर्तिमति थोड़ी तृप्त हुई और बोली "स्वामी, मेरी और कोई इच्छा नहीं है। एक विवाहिता स्त्री के नाते संतान की अपेक्षा करना कोई धर्मविरुद्ध इच्छा तो नहीं है ना?"

महिर्षि ने उसकी बातों पर विचित्र प्रकार से हँस दिया और कहा "धर्म का स्वरूप बड़ा ही सूक्ष्म है। उसकी गहराई को जानता है भगवान मात्र।"

फिर, महर्षि के कहे अनुसार राजदंपति चंद्रोदय के पहले ही उस आम के पेड़ के पास पहुँच गये। पेड़ पर आम का फल सुवर्ण फल की तरह दीप्तिमान था। उसे देखकर कीर्तिमति ने बड़ी ही भक्ति से प्रणाम किया। अंजलि फैलायी और खड़ी हो गयी। चंद्रधर भी अंजलि फैलाकर उससे थोड़ी दूरी पर खड़ा हो गया,

जिसकी कल्पना भी कीर्तिमति ने नहीं की।

चंद्रोदय हुआ। धीरे-धीरे आम का फल नीचे गिरता गया और चंद्रधर की अंजलि में आकर गिरा।

यह दृश्य देखकर कीर्तिमति स्तब्ध रह गयी। पर शीघ्र ही उसने अपने आपको संभाल लिया। चंद्रधर ने फल का आधा भाग उसे दिया तो उसने सहर्ष स्वीकार किया। दोनों ने चुपचाप फल खा लिया।

तब तक चुप कीर्तिमति ने कहा "प्रभू, मैं क्या जान सकती हूँ कि आपकी क्या इच्छा थी?"

चंद्रधर ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया "कीर्ति, तुम विद्यावती हो, विवेकशील हो। मुझे विश्वास है कि मेरी बातों और मेरे कामों से तुम खुश हो। महर्षि की बातें तुम्हें याद ही होंगीं। उन्होंने कहा था कि हमारी इच्छा धर्मसम्मत हो। हो सकता है कि संतान का न होना हमारी कमी हो। किन्तु उसका जहाँ तक सृष्टि से संबंध है, न ही वह अधर्म है और न ही वैपरीत्य है। विधि का विधान अनोखा होता है। इसका हम आदर करते हैं। उसमें हम परिवर्तन करना चाहें तो क्या यह संभव हो पायेगा ? इसी बात को लेकर मैं संदेह में पड़ गया। चोर चोरी करके धन कमाता है; अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह के बंधन में बंधा पति निसंतान स्त्री की उपेक्षा करता है और किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लेता है।

ये काम धर्म-विरुद्ध हैं। इधर कुछ दिनों से मुझपर दबाव डाला जा रहा है कि मैं वंश-वृद्धि के लिए यह धर्म-विरुद्ध कार्य करूँ।

इसीलिए मैंने आज इस पवित्र वृक्ष से यों प्रार्थना की कि धर्ममूर्ति, हमें आशीर्वाद दो कि अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह के पवित्र बंधन में बंधे हम जीवन-पर्यंत आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करें।"

कीर्तिमति क्षण भर के लिए निस्तेज रह गयी, पर पल भर में आनंद से उसका रोम-रोम सिहर उठा। संतान के न होने पर भी ऐसे उत्तम आदर्शवान पति को पाकर गर्व से उसका सिर ऊँचा हो गया। आनंद से वह फूल उठी। दूसरे ही दिन राजदंपति राजधानी

लौटे। कुछ दिनों के बाद चैत्र बहुलपंचमी के दिन निश्चित समय पर चित्रलेखा, कीर्तिमति से मिली।

कीर्तिमति ने उसका आदर-सत्कार किया, उसे बिठाया और कहा "चित्रलेखा, वचन-भंग के लिए मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ। मेरा पति एकपत्नीव्रती है।" फिर उसने सब कुछ बताया, जो हुआ।

चित्रलेखा ने कहा "कीर्तिमति, तुम बड़ी भाग्यवान हो। शीघ्र ही तुम माँ बनोगी।" कहकर वह चली गयी।

और एक वर्ष के अंदर सचमुच कीर्तिमति माँ बनी। उसका एक सुंदर लड़का हुआ।

बेताल ने यह कथा सुनाकर राजा से पूछा "राजन, चित्रलेखा को दिये वचन को तोड़ा कीर्तिमति ने। इसमें उसका स्वार्थ स्पष्ट दीख रहा है। संतान की कोई रेखा ही नहीं है उसकी हथेली में, फिर भी वह माँ बनी। यह तो बड़ी विचित्र बात हुई। मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रहे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।"

इसपर विक्रमार्क ने कहा "कीर्तिमति ने स्वार्थवश हो वचन-भंग नहीं किया। निसंतान ही रह जाऊँगी, इसके दृढ़ीकरण के पहले ही पति की बतायी धर्म-सूक्ष्मता ने उसे निस्सहाय बना दिया। अपना वचन निभाना, चंद्रधर के कहे अनुसार धर्मविरुद्ध ही होगा। वह ऐसा करके पापिन नहीं बनना चाहती थी। चंद्रधर की प्रार्थना में दो अर्थ है। एक है - विधि का लिखा परिवर्तित हो और उन्हें संतान की भिक्षा मिले। इससे उनका जीवन हमेशा आनंद से गुज़रे। दूसरा-दुर्भाग्य से उनकी कोई संतान ही न हो तो भी भगवान आशीर्वाद दें कि दोनों आनंद से जीवन बिता सकें। चंद्रधर के धर्मसूत्र का यह सूक्ष्म तत्व है। और इसी ने उनकी ललाट रेखाओं को बदल दिया। धर्म-अधर्म का विलक्षण-ज्ञान था चंद्रधर को। इसीलिए उसकी प्रार्थना ने असाध्य को साध्य बना दिया।"

मौन-भंग में सफल बेताल शव को लेकर अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

**आधार - किरण की रचना**

# बंबई की राह में

आलेख : मीरा नायर ◆ चित्र : गौतम सेन

दमण समुद्रतट के झाऊ के पेड़

महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा पर छोटा-सा संघशासित क्षेत्र **दमण** बसा है. उसका समुद्रतट १२ किलोमीटर लंबा है. वहां मच्छीमारों की अनेक बस्तियां हैं. तट पर झाऊ के झुरमुट हैं. किसी जमाने में दमण पुर्तगाल का उपनिवेश था. मोटी दमण और नानी दमण में पुर्तगालियों की बनवायी इमारतें आज भी मौजूद हैं. 'मोटी' और 'नानी' गुजराती में बड़ी और छोटी को कहते हैं.

दमण के उत्तर में गुजरात राज्य की सीमा समाप्त होती है और दक्षिण में महाराष्ट्र की सीमा शुरू होती है. महाराष्ट्र के समुद्रतट के उत्तरी छोर पर बसा है **डहाणू** का हरा-भरा इलाका. किंतु डहाणू हमेशा से ऐसा हरा-भरा नहीं था. १८८० ई. के आस-पास वहां ईरानी प्रवासी आ कर बस गये और उन्होंने वहां फलों के बाग लगाये. डहाणू की प्रसिद्धि आज इन्हीं फलों के कारण है. वहां चीकू खूब होते हैं और देश के अन्य भागों में भेजे जाते हैं.

कुछ वर्ष पूर्व बाम्बे सबर्बन इलेक्ट्रिक सप्लाई कंपनी ने डहाणू में एक तापबिजली संयंत्र लगाया है, जो कोयले से बिजली पैदा करता है. डहाणूवासियों को यह डर है कि संयंत्र से निकलनेवाला जहरीला धुआं चीकू की बागबानी को बहुत नुक्सान पहुंचायेगा. उससे चीकू की पैदावार घटेगी, उसका स्वाद भी बिगड़ेगा.

डहाणू के मशहूर चीकू

डहाणू से कुछ दूर दक्षिण में **नाला सोपारा** गांव है. पुराने जमाने में वह **शूर्पारक** नाम का बहुत महत्वपूर्ण बंदरगाह था. शूर्पारक (प्राकृत रूप 'सुप्पारअ') पर से ही हिंदी का 'सुपारी' शब्द बना है. बात यह है कि दक्षिण के मलबार-तट व अन्य इलाकों से सुपारियां शूर्पारक में उतारी जाती थीं और यहां से देश के अन्य प्रांतों को भेजी जाती थीं. यहां मोती भी निकाले जाते थे और चीन को निर्यात किये जाते थे. नाला सोपारा आजकल बंबई का उपनगर है.

वज्रेश्वरी के गरम पानी के कुंड

बौद्धों की मान्यता है कि पूर्वजन्म में भगवान बुद्ध बोधिसत्व के रूप में एक बार इस क्षेत्र में जनमे थे. यहां कुछ बौद्धकालीन अवशेष और स्तूप भी मिले हैं.

नाला सोपारा से दस किलोमीटर दक्षिण में **वसई** अथवा **बसीन** में **पापडी** का प्राचीन जहाज बनाने का केंद्र था. जहाजों के लिए लकड़ी आती थी आस-पास के जंगलों से, जिनमें कलंब, साग, खैर और हल्दू के पेड़ बहुतायत से थे. सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने जहाज-निर्माण के उद्योग को खूब बढ़ावा दिया. वसई में पुर्तगालियों के बनवाये मजबूत किले, गिरजाघर और आलीशान बंगलों के अवशेष उ जमाने की याद दिलाते हैं. टूटा हुआ किला अब पिकनिक-स्थल बन गया है.

बंबई से करीब ३५ किलोमीटर दूर
वसई में पुर्तगालियों का बनवाया किला

कान्हेरी की चैत्य गुफा में स्तूप

गुफ
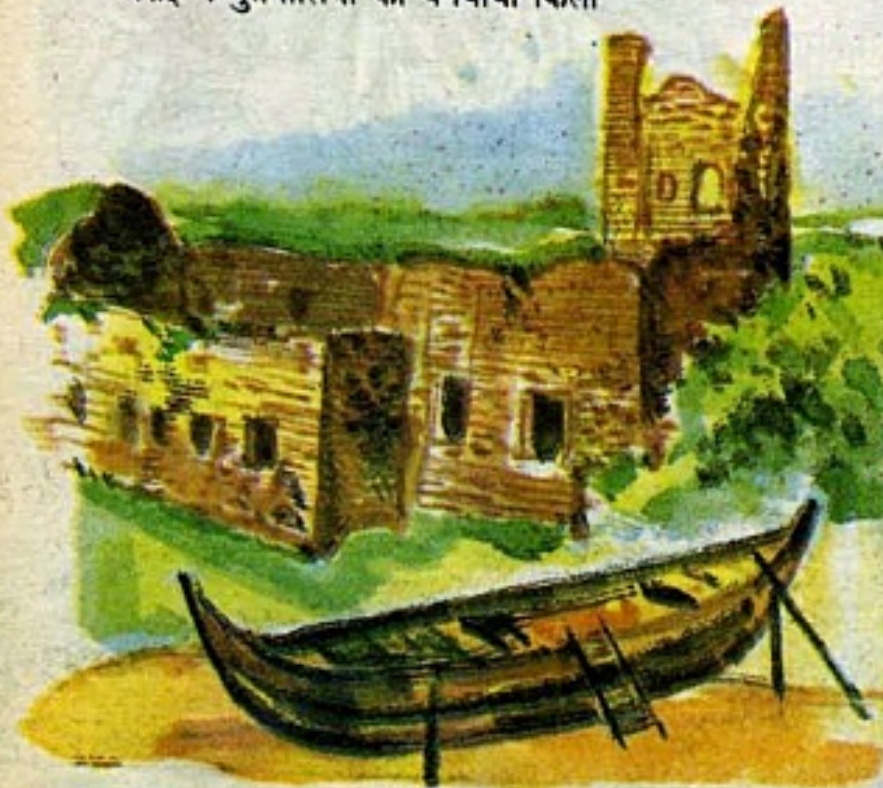
इस क्षेत्र में तानसा नदी बहती है. नदी में या उसके आस-पास कई गरम पानी के कुंड हैं. इनके पानी का तापमान ११० फा. से ले कर १३६ फा. तक होता है. पानी में गंधकयुक्त गैस के बुलबुले उठते रहते हैं. इन कुंडों में स्नान करने से कई तरह के रोगियों को लाभ पहुंचता है. वसई रोड स्टेशन से करीब १० किलोमीटर दूर **वज्रेश्वरी** का कुंड बहुत लोकप्रिय है. दूसरा बड़ा कुंड **गणेशपुरी** में है. इसका पानी इतना ज्यादा गरम है कि उसमें हाथ भी नहीं डाला जा सकता.

बंबई के उत्तरी उपनगर बोरिवली के पास **कान्हेरी** की प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएं स्थित हैं. कान्हेरी (कृष्णगिरि) पहाड़ियों में होने की वजह से इनका यह नाम पड़ा है. पश्चिम भारत में बौद्ध गुफाओं का सबसे बड़ा समूह है यह. इनका निर्माण ईसा की दूसरी शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच बौद्ध भिक्षुओं ने किया था. गुफाओं में चैत्य, स्तूपों, स्तंभों आदि में पत्थरों पर नक्काशी का सुंदर काम है. गुफाओं के साथ पीने के पानी के कुंड थे. बरसाती पानी और गंदे पानी की निकासी के लिए नालियां भी थीं.

उस

यहां कुल मिला कर १०९ छोटी-बड़ी गुफाएं हैं. उनमें दरबार गुफा और चैत्य गुफा सबसे महत्वपूर्ण हैं. दरबार गुफा के मध्य में पत्थर की दो लंबी पीठिकाएं हैं. शायद भिक्षु इस गुफा में बैठ कर प्रवचन सुनते थे. चैत्य गुफा में विशाल स्तूप और गौतम बुद्ध की बड़ी-बड़ी मूर्तियां हैं.

**कान्हेरी की विशाल चैत्य गुफा**

**कान्हेरी की गुफाएं**
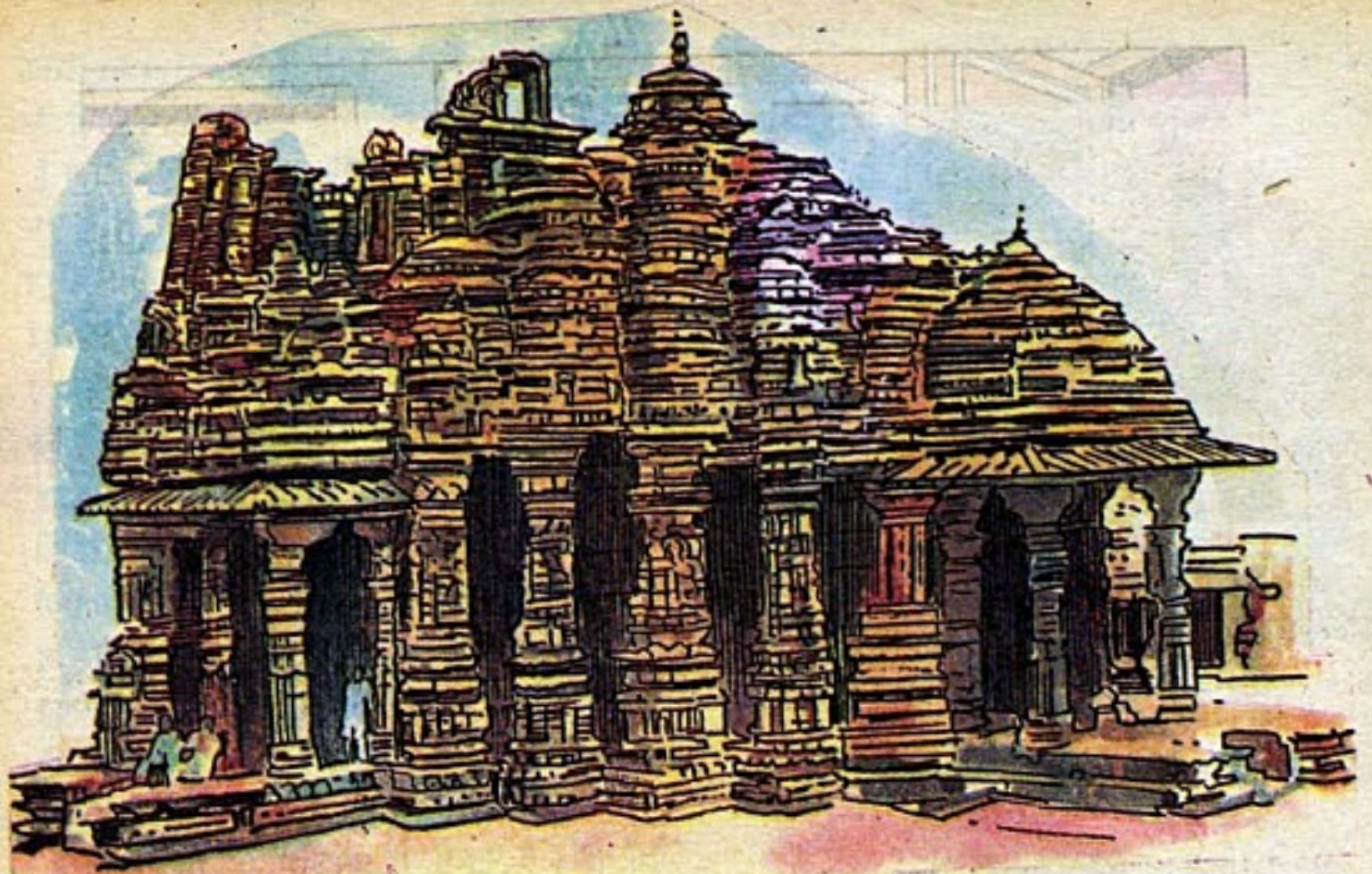
अंबरनाथ का शिवमंदिर

कान्हेरी से तनिक दूर जोगेश्वरी की गुफाएं हैं. इनमें सन ७५०-८०० ई. में बना एक शिवमंदिर है.

बंबई से ५४ किलोमीटर दूर अंबरनाथ उपनगर में शिवजी का एक और प्रसिद्ध मंदिर है. यह काले पत्थरों से बना है और जमीन की सतह से करीब पांच मीटर नीचे एक गड्ढे में है. भक्त-जन यहां की मूर्ति को स्वयंभू यानी स्वयं प्रकट हुई मानते हैं. सन १९४७ के बाद पाकिस्तान से आये सिंधी बड़ी संख्या में अंबरनाथ में बस गये और मंदिर में पुनः जोरों से पूजा होने लगी.

बंबई के पूर्वी समुद्रतट पर करीब १८ किलोमीटर लंबा एक संकरा समुद्री नाला है. उसके उत्तरी छोर पर ठाणे है और दक्षिणी छोर पर ट्राम्बे (मूल नाम तुर्भे). इस नाले के कई हिस्से दलदली हैं. नाले में कुछ जगहों पर नमक बनाया जाता है. किसी जमाने में यहां मोती मिलते थे और उनकी तलाश में मछुआरे सीप और घोंघे पकड़ा करते थे.

और ट्राम्बे में क्या है, यह बात हम सभी जानते हैं. वहां भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र स्थित है, जो कि हमारे देश में परमाणु अनुसंधान की सबसे मुख्य संस्था है.

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र

# बुरा सपना

चमेली घमंड़ी थी। वह अपनी सास मंगा को कीड़े से भी बदतर मानती थी। उसे थोडा-बहुत खाना खिलाना भी बहुत बड़ा काम मानती थी। समझती थी कि मैं बड़ा ही पुण्य कार्य कर रही हूँ। सास जो भी काम करे, उसमें खोट निकालती थी।

सास मंदिर से लौटती तो पूछती कि भगवान से तुमने यही मन्नत माँगी ना कि बहू मर जाए, उसका नाश हो जाए।

बहू से ड़रकर बेचारी ने कहीं आना-जाना भी छोड़ दिया। घर के आगे के चबूतरे पर बैठती तो उसपर पिल पड़ती। कहती "आने-जानेवालों को गिन रही हो क्या? और काम ही क्या है। पेट भर खाया और बैठ गयी। यह भी ना करोगी तो जो खाया, कैसे पचेगा?"

खाते समय मंगा थोड़ा और अन्न परोसने को कहती तो चिल्ला पड़ती "क्या कहा, और चाहिये। कहाँ से लाऊँ? ऐसे खाती जाओगी तो अपने बेटे का दिवाला निकल जायेगा।" कहती हुई मुट्टी भर अन्न थाली में ड़ाल देती।

जिस दिन सास बिना और कुछ माँगे चुपचाप खाती रहती तो कहने लगती "बीमार पड़ जाओगी और महारानी की तरह पलंग पर लेटी रहोगी तो तुम्हारी सेवा करने के लिए यहाँ कोई दास-दासियाँ नहीं हैं।" कहती हुई बरतन में जितना भी अन्न है, उसकी थाली में उँड़ेल देती।

बहू के इस बुरे बरताव पर मंगा मन ही मन दुखी होती। चमेली का पति चंद्रू अक़्लमंद है, पर पत्नी के सामने उसकी कुछ नहीं चलती। वह मुँह सीके बैठ जाता था। पत्नी कहे तो उठेगा, बैठेगा। वह माँ की दीन स्थिति को देखता आ रहा था। पर कुछ करने की हालत में नहीं था। इसका एक कारण भी था। चंद्रु संपन्न नहीं था। उसके

अजीत वर्मा

पास इतना धन भी नहीं था कि वह खुद कोई व्यापार कर सके। चमेली के पिता ने ही धन देकर उससे फूलों का व्यापार शुरु करवाया।

दिन में एक बार ही सही चमेली, चंद्रू से कहती "देखो, यह सब मेरे पिता की कृपा है। अगर वे सहायता नहीं करते तो तुम और तुम्हारी माँ कोई मज़दूरी करते और ज़िन्दगी गुज़ारते।"

एक दिन सबेरे-सबेरे चमेली ने एक भयंकर बुरा सपना देखा तो चौंककर पलंग पर उठ बैठी। उस सपने में उसने देखा कि घने बादलों से घिरे आकाश में चार लोग लकड़ियों से बंधी एक चीज़ को कंधों पर ढ़ोकर ले जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे एक वृद्धा रोती-बिलखती जा रही है। उसने सबेरे अपने पति चंद्रु से सपने में देखी बात बतायी और पूछा "इस सपने का क्या मतलब हो सकता है? इस बुरे सपने की वजह से नींद भी उचट गयी। डर भी लगने लगा है।"

चंद्रु ने सोचकर ऐसा कहा मानों वह जान गया हो कि इस सपने का क्या मतलब है। उसने कहा "दिन में आनेवाले सपनों के बारे में हमें ड़रने की कोई ज़रूरत नहीं। परंतु रात के सपने बड़े ख़तरनाक होते हैं। मुख्यतया चौथे पहर में आनेवाले सपने सौ फ़ी सदी सच निकलते हैं। पहले यह बताओ कि तुमने जो सपना देखा, वह मुर्गी की बाँग के पहले था या बाद।"

चंद्रू की बातों पर चिढ़ती हुई चमेली ने कहा "वाह रे वाह, ऐसा भाषण दे रहे हो मानों स्वप्न-शास्त्र को पचा लिया है। तुम्हें तो चमेली और कमल पुष्प का भेद भी नहीं मालूम। मुझे रुलाने के लिए कहीं यह सारा नाटक कर रहे हो क्या?"

चंद्रु ने गंभीरता से कहा "यह कोई खेल या हँसाने-रुलाने का समय नहीं है। तुम्हारे बुरे सपने की वजह से मैं और तुम, मेरा मतलब हम दोनों आफ़तों में फँसनेवाले हैं। हमारे ही गाँव के पूर्वी भाग के तालाब के उत्तरी भाग में बबूलों की झाड़ियों में एक गूँगा बैरागी आया हुआ है। वह साल भर भिन्न-भिन्न स्थलों में भ्रमण करता रहा और

चार ही दिनों के पहले यहाँ आया हुआ है। वह सपनों का मतलब भली-भांति बता सकता है। एक साल के पहले जब मैं शादी-शुदा नहीं था, तब मेरे एक सपने का मतलब भी उसीने बताया।''

चमेली ने कुतूहलवश उससे पूछा कि क्या तुमने तब कोई बुरा सपना देखा? ''बुरा सपना नहीं, अच्छा सपना ही देखा था'' चंद्रू ने कहा। चमेली ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा ''बताओ, वह अच्छा सपना क्या था?''

''तो सुनो। मैंने सपने में देखा कि मैं एक अतिसुंदर युवती के पीछे-पीछे जा रहा हूँ। वह मुझे पुष्पों के एक बगीचे में ले गयी और हठात् ग़ायब हो गयी।''

''उस भाग्यवती ने अच्छा ही किया।'' चमेली ने आनंद से चुटकी बजायी।

''मुझे बताने दो। रुकावट मत डालो। मैंने इस सपने के बारे में बैरागी को बताया। उसने बहुत देर तक सोचा-विचारा और फिर कहा कि तुमसे शादी रचानेवाली लड़की तुम्हारे जीवन को नंदनवन बना देगी। उसका भी नाम एक पुष्प के नाम पर होगा। बैरागी की बात बिल्कुल सच ही तो निकली।''

''हाँ, सच ही निकली। पर तुम तो कह रहे थे कि वह बैरागी गूँगा है। कैसे बता सका?'' संदेह भरे स्वर में उसने पूछा।

''उंगली से रेत में लिखकर दिखायेगा। शाम को जाना और अपने बुरे सपने के बारे में उससे कहना।'' चंद्रु ने कहा।
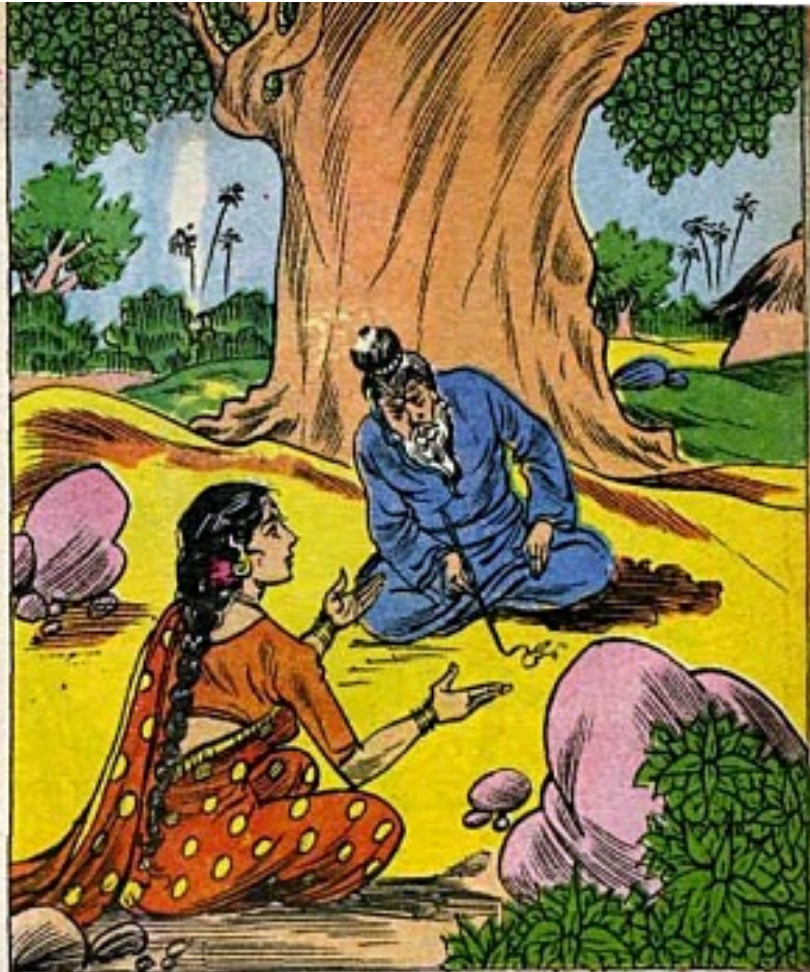
उस दिन शाम को अपनी सास मंगा से चमेली ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा ''मैं बाहर जा रही हूँ। मेरी ग़ैरहाज़िरी का फ़ायदा उठाकर पड़ोसियों के घर जाकर बैठना मत। घर की देखभाल करती रहो।'' कहकर वह बैरागी से मिलने बबूल के पेड़ों की झाडियों की तरफ़ गयी।

आँखें बंद करके बैठे हुए बैरागी ने चमेली के आते ही आँखें खोलीं। अपनी लंबी दाढ़ी को अपनी उँगलियों से सहलाने लगा। चमेली श्रद्धापूर्वक बैरागी से थोड़ी दूरी पर बैठ गयी और प्रणाम किया। फिर पूछा ''सपनों के परमार्थ बता सकनेवाले महात्मा आप ही हैं

ना स्वामी?''

''सपनों का मर्म पूछो तो बता सकता हूँ, पर मैं कोई  महात्मा नहीं हूँ'' बैरागी ने रेत में लिखकर दिखाया।

चमेली ने देखे अपने बुरे सपने के बारे में पूरा-पूरा विवरण दिया और पूछा ''इस बुरे सपने का क्या अर्थ है?'' बैरागी ने कुछ समय तक आँखें बंद की। फिर आँख खोलकर कहा ''तुमने जिसे सपने में देखा, उसका नाम अभी मुझे याद नहीं आ रहा है। पर जिस साधन को वे ढ़ोकर ले जा रहे थे, वह है पापियों को नरक में पहुँचाने का साधन। बहुत ही जल्द तुम भी वहीं पहुँचनेवाली हो।'' उसने यह संदेश रेत में लिखा।

उसे पढ़कर चमेली चौंक पड़ी ''स्वामी, मैंने जिन चार आदमियों को देखा था, वे किसी वस्तु को मेघों के बीच में से ढ़ोकर ऊपर ले जा रहे थे। कहते तो हैं कि नरक भूमि के नीचे होता है।''

उसके इस प्रश्न पर बैरागी अपनी निबिड़ दाढ़ी में मुस्कुराता हुआ बोला ''तुमने जो देखा, वे मेघ नहीं हैं। किंकरों की हिंसा न सह पाने के कारण पापियों की आँखों से निकला आँसुओं का भाष्पीय रूप है।'' उसने रेत में लिखा।

चमेली ने इन बातों को सुनकर बेहोश होने से अपने को संभाला और हीन स्वर में कहा ''मेरी शादी अभी-अभी हुई है। माँ भी बनी नहीं। इस कम समय में ही यह दुर्दशा कैसी? पीछे-पीछे रोती-विलखती जो बुढ़िया आ रही थी क्या वह मेरी माँ ही थी?''

''पीछे-पीछे आनेवाली वह बुढ़िया तुम्हारी माँ नहीं है। वह तुम्हारी सास है। इस संसार में वही एक है, जो तुम्हें हृदयपूर्वक चाहती है। उसके मर जाने के बाद उसके इकलौते बेटे की देखभाल तुम्हीं करोगी। तुम्हें ही संतान देकर उसके वंश का उद्धार करना होगा, इसलिए वह तुम्हें बहुत चाहती है। जिस दिन तुम्हारे मृत शरीर को पलंग से उठाकर ज़मीन पर रखा गया, उस दिन वही एक थी, जो रोती ही रही। ऐसी उत्तम स्त्री की तुम इज्ज़त नहीं कर

रही हो। पालतू कुत्ते की तरह उसका पालन-पोषण कर रही हो, दिन व दिन पाप ढोती जा रही हो। पाप का भार सिर पर उठाकर जल्दी ही नरक पहुँचनेवाली हो।'' बैरागी ने रेत में लिखकर दिखाया।

यह पढ़ते ही पश्चात्ताप से चमेली की आँखों में आँसू आ गये। उसने कहा ''क्या इस पाप का कोई प्रायश्चित नहीं? इस आपत्ति से आप ही मुझे मार्ग सुझाकर उबार सकते हैं।''

बैरागी ने आँखें बंद्र कर लीं और सोच में लीन हो गया। अपने हाथ की लकड़ी को शून्य में घुमाया और रेत पर लिखा ''क्यों नहीं ? मार्ग है। इस क्षण से सास का आदर करो। उसे अपने प्राण समान मानो। वह तुम्हें क्षमा कर देगी। तुम्हें आशीर्वाद देगी। इससे तुम्हारे बुरे सपने का दोष दूर हो जायेगा। तुम्हारी आयु भी बढ़ेगी और संतान पाकर सुखी जीवन बिता पाओगी।''

फिर बैरागी ने इशारे से कहा कि अब जा सकती हो।

घर लौटते ही चमेली ने सास मंगा के पैरों का स्पर्श किया और कहा ''अहंभाव के कारण मैंने अब तक आपको कष्ट पहुँचाया। अज्ञान के कारण मैं अपना कर्तव्य भूल गयी। मुझे क्षमा कीजिये सासजी।''

दूसरे दिन चंद्रू जब पिछवाड़े के कुएँ के पास नहा रहा था तब उसकी माँ मंगा पौधों को पानी देने आयी। उसने बेटे से कहा ''बेटे, यह सब क्या हो रहा है। जादू ही हो गया। बहू में यह कायापलट कैसी ?''

चंद्रू हँसता हुआ बोला ''यह सब चमेली के बुरे सपने का फल है। बैरागी का महत्व है।''

मंगा ने कहा ''तो मैं भी उस बैरागी का दर्शन करूँगी।''

माँ की बातों से वह घबरा गया और कहा ''माँ, ऐसा नहीं हो सकता। अपनी शेष तपस्या को पूर्ण करने के लिए आज सबेरे ही वे उत्तरी दिशा की ओर चले गये।''

चंद्रू ने अपनी माता से कभी भी यह नहीं कहा कि मैं ही वह बैरागी था।
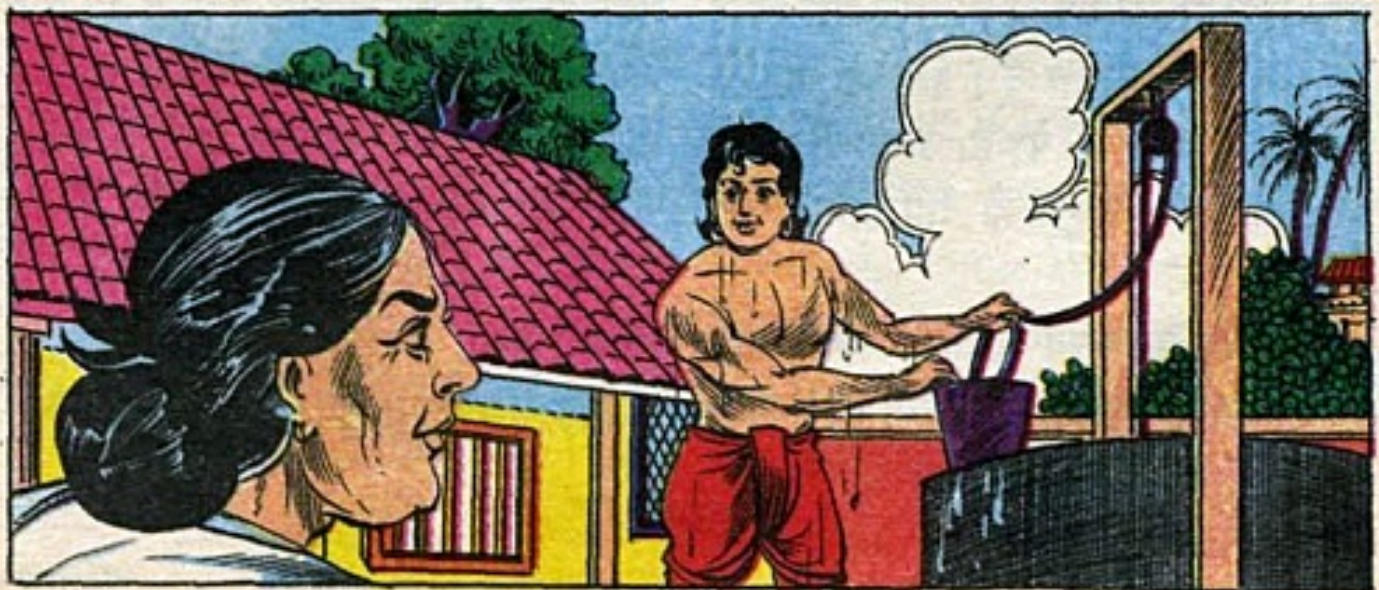
# बिच्छू का डंक

एक गाँव में दो दोस्त थे। उनमें से पद्मनाभ स्नेहपात्र था तो धर्मवीर कंजूस। पद्मनाभ की संतान नहीं थी। इसलिए उसने सोचा कि तीर्थ यात्राओं पर जाऊँ और पुण्य कमाऊँ। उसके पास दो सौ अशर्फ़ियाँ थीं। उस रक़म में से एक सौ अशर्फ़ियाँ अपने खर्च के लिए रख लीं और सोचा कि बाक़ी सौ अशर्फ़ियाँ कहीं सुरक्षित रखूँ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ यह रक़म छिपाऊँ तो उसने अपने दोस्त धर्मवीर से सलाह माँगी।

धर्मवीर ने कहा "तुम्हारी रक़म अपने पास सुरक्षित रख सकता हूँ, परंतु मुझे ड़र है कि कहीं खर्च कर न दूँ। इसलिए गाँव के बाहर बरगद का जो पेड़ है, उसके नीचे गाड़ दो। किसी को मालूम ही नहीं होगा। जब लौटोगे, ले लेना।"

पद्मनाभ को अपने दोस्त की सलाह सही लगी। किन्तु दिन-दहाडे पेड़ के नीचे रक़म छिपायी जाए तो किसी के देखने का ड़र है। वह खोदकर रक़म ले भी जाए। इस कारण पद्मनाभ ने सोचा कि अंधेरे में यह काम करूँ तो ठीक होगा। अंधेरे में अकेले ही जाने से उसे ड़र लग रहा था तो अपने साथ धर्मवीर को भी ले गया। उसने उसी के समक्ष सौ अशर्फ़ियाँ बरगद के पेड़ के नीचे ज़मीन खोदकर छिपा दीं और दूसरे दिन अपनी पत्नी के साथ तीर्थ-यात्रा पर निकल पड़ा।

धर्मवीर की पत्नी पद्मा ने जब देखा कि उसका पति उस रात को बहुत देरी से लौटा तो उसने वजह पूछी। धर्मवीर ने पत्नी को बता दिया कि पद्मनाभ ने बरगद के पेड़ के नीचे अशर्फ़ियाँ छिपाकर रखीं। यह सुनते ही उसकी पत्नी पद्मा में दुर्बुद्धि जगी। उसने जिद की कि वह रक़म ले आओ। धर्मवीर ने पहले तो साफ़ इनकार किया, किन्तु जब पद्मा ने धमकी दी कि ऐसा ना करने पर कुएँ में गिरकर मर जाऊँगी

तुलसी

तो पत्नी के कहे अनुसार पेड़ के पास गया और धन ले आया। इस धन से पद्मा ने गहने बनवाये। अपने इस काम पर वह बेहद खुश थी।

कुछ समय बाद पद्मनाभ तीर्थ यात्रा से लौटा। उसी दिन बरगद के पेड़ के पास गया और वह ज़मीन खोदी, जहाँ उसने अशर्फ़ियाँ छिपायी थीं। वहाँ कुछ नहीं था। अब उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि यह करतूत कंजूस धर्मवीर की ही है। वह सीधे ग्रामाधिकारी के पास गया और उससे शिकायत की।

ग्रामाधिकारी ने पूरा मामला जानने के बाद पद्मनाभ से कहा "पद्मनाभ, अब कोई फ़ायदा नहीं होगा। मेरे या तुम्हारे माँगने मात्र से धर्मवीर धन वापस नहीं देगा। कोई गवाही ही नहीं है कि तुमने बरगद के पेड़ के तले अशर्फ़ियाँ छिपायीं थीं। इसलिए एक काम करो।" उसने उसके कानों में एक उपाय बताया।

ग्रामाधिकारी के यहाँ से पद्मनाभ सीधे धर्मवीर के घर गया। उसे देखते ही धर्मवीर का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वह पसीना-पसीना हो रहा था। किन्तु पद्मनाभ की सूरत से ऐसा लग रहा था कि उसे यह बात अभी तक मालूम नहीं हुई। लगता है कि वह अब तक बरगद के पेड़ के पास गया ही नहीं। ऐसा सोचकर उसने धीरज-भरे स्वर में उससे कहा "पद्मनाभ, अभी-अभी आये हो क्या ? यात्रा सुखप्रद रही ?" उसने उससे उसका कुशलमंगल पूछा।

"हाँ, तुम्हारी दया से यात्रा बहुत ही सफल रही। हम दोनों को एक और बार बरगद के पेड़ के पास जाना होगा। क्योंकि भाग्य ही समझो, इस यात्रा में मैंने एक हज़ार अशर्फ़ियाँ कमायीं। इस धन को भी मैं वहीं उस पुरानी रक़म के साथ गाड़कर छिपाना चाहता हूँ। यह काम पूरा हुआ तो निश्चिंत होकर काशी की यात्रा कर आना चाहता हूँ। कल रात को मैं तुम्हारे घर जाऊँगा। दोनों मिलकर पेड़ के पास जायेंगे।"

उसकी बात सुनकर धर्मवीर डर गया। 'हाँ' ज़रूर जाएँगे, कहकर पद्मनाभ को उसने भेज दिया। फिर तुरन्त ही उसने यह बात

अपनी पत्नी से बतायी और कहा "बरबाद हो गये। कौन-सा मुँह लेकर कल मैं उसके साथ जा पाऊँगा। मेरी-चोरी का राज़ खुल जायेगा।"

"क्यों इतना ड़र रहे हो? मेरे सारे गहनों को गिरवी पर रख दो और सौ अशर्फ़ियाँ आज ही बरगद के पेड़ के नीचे छिपाकर आ जाओ। उसे देखते ही पद्मनाभ को और विश्वास हो जायेगा। वह अपनी एक हज़ार अशर्फ़ियाँ भी वहीं रख देगा। जैसे ही वह काशी की यात्रा पर निकलेगा, हम सारी अशर्फ़ियाँ हड़प कर जायेंगे।" पद्मा ने यों उपाय बताया।

धर्मवीर पत्नी की चालाकी पर बहुत खुश हुआ। गहनों को गिरवी पर रखकर सौ अशर्फ़ियाँ ले आया और उसी दिन रात को बरग़द के पेड़ के नीचे गाड़कर लौटा।

दूसरे दिन रात को धर्मवीर ने बहुत देर तक पद्मनाभ की प्रतीक्षा की। पर उसका कोई पता नहीं। आधी रात हो गयी। आख़िर धर्मवीर, पद्मनाभ के घर गया और दरवाज़ा खटखटाया। सोया हुआ पद्मनाभ जागकर आँखें मलता हुआ बाहर आया और पूछा "क्या बात है धर्मवीर, आधी रात को कैसे आना हुआ?"

"तुम्हीं ने तो कहा था कि आज रात को बरगद के पेड़ के पास जाएँगे" धर्मवीर ने कहा।

"अच्छा, इस काम से आये हो? मैं तो तुमसे सबेरे बतानेवाला था कि काशी की यात्रा मैंने स्थगित कर दी। इसलिए शाम को अकेले चला गया और वह धन ले आया।"

धर्मवीर एकदम ठंडा पड़ गया और निराश हो घर लौटा। यह बात उसने बड़ी ही दीनता से अपनी पत्नी को बतायी। पद्मा रोने -धोने लगी।

पद्मा ने कहा "इतना धोखा? गहने गिरवी पर रख दिये। अब उन्हें कैसे छुड़ा सकते हैं।" वह कहती जाती और रोती जाती। धर्मवीर भी साथ-साथ रोने लगा। पर कर भी क्या सकते हैं। चोरों को बिच्छू ने डंक मारा। अब मुँह सीकर बैठने के सिवा कोई रास्ता भी तो नहीं है।

अग्निहोत्री ने अपना दुखड़ा ब्रह्मा को सुनाया तो क्षण भर सोचकर ब्रह्मा ने उससे कहा "नर-नारायण, कृष्ण-अर्जुन बनकर भूमि पर अवतरित हुए हैं। वे बहुत शीघ्र खाँडव वन-प्रांत में आनेवाले हैं। समय पाकर तुम उनसे मिलो। अगर वे तुम्हारी सहायता करेंगे तो इंद्र क्या, सब देवता भी मिलकर तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। तुम्हारा कार्य अवश्य पूर्ण होगा।"

इसीलिए अग्नि आज कृष्णऔर अर्जुन की सहायता माँगने आया। अर्जुन ने अग्निहोत्री से कहा "अग्निहोत्री, मैं जानता हूँ कि इंद्र आदि देवताओं से लड़ने के लिए किन अस्त्रों का उपयोग करना चाहिये। किन्तु अब मेरे पास न ही श्रेष्ठ धनुष है, ना ही उत्तम घोड़ों से सजा दृढ़ रथ। मुझे व कृष्ण को आवश्यक अस्त्र दोगे और दृढ़ रथ का प्रबंध करोगे तो तुम्हारी इच्छा की पूर्ति हो सकती है।"

अग्निहोत्री ने वरुण का स्मरण किया। वरुण प्रत्यक्ष हुआ। अग्निहोत्री ने वरुण से कहा 'महानुभाव, चंद्र ने तुम्हें गांडीव नामक धनुष दिया, अक्षय तूणीर दिये, कपिध्वज से सुसज्जित रथ दिया और अलावा इसके, तुम्हारे पास चक्रायुध भी है। उनसे मेरा काम आ पड़ा है। उधार दो।"

वरुण ने, अग्निहोत्री को उसकी माँगीं समस्त वस्तुएँ दीं। अग्निहोत्री ने उन्हें कृष्णार्जुन के सुपुर्द किया। कृष्ण ने चक्र लिया। गांडीव और अक्षय तूणीरों को अर्जुन ने लिया। गांडीव कोई साधारण धनुष नहीं। वह लाख आयुधों के समान है। उस रथ का तथा उन अक्षय तूणीरों का निर्माण किया बहुत ही पूर्व, विश्वकर्मा ने। चंद्र ने इनका उपयोग किया देव-असुरों के युद्ध में।

कृष्ण ने जिस चक्र को लिया, उसमें

और अग्नि को आहुति देते रहे। आकाश में उड़ने के प्रयत्न में जुटे विविध रंगों के पक्षी ताप को न सह सके और जल-भुनकर उन्हीं लपटों में गिर गये।

खांडव-वन दारुण रूप से जला जा रहा था। लगता था प्रलय हो गया। देवता भयभीत होकर इंद्र के पास गये। उन्होंने कहा कि समस्त लोक जलकर राख हो जाएँगे। खांडव वन पर भारी वर्षा बरसाने की उन्होंने इंद्र से प्रार्थना की।

भारी वर्षा होती रही। परंतु पानी भाप बन गया। अग्नि को बुझा ना सका। यह देखकर इंद्र आपे से बाहर हो गया। उसने तुरंत ही मेघों को आदेश दिया कि खांडव वन पर भारी वर्षा हो।

शत्रु को मारकर लौटने की शक्ति है। अंतर्धान होने के पहले वरुण ने अग्निहोत्री को कौमोदकि नामक गदा भी दी।

आयुधों को स्वीकार करने के बाद कृष्णार्जुन ने अग्निहोत्री से कहा "हे अग्निदेव, खांडव वन को जलाने का कार्य आरंभ कर दो। इंद्र भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

अग्निहोत्री उत्साह से भर गया। उसने खांडव वन में प्रवेश किया और वहाँ के महावृक्षों, लताओं, औषधियों तथा वनस्पतियों का दहन करने लगा। अग्नि को सह न सकने के कारण वन के विविध जंतु भागने लग गये। कृष्णार्जुन उन्हें रोकते रहे

खांडव वन पर ही नहीं, बल्कि आसपास के सब प्रदेशों में भी वर्षा का प्रभाव न हो, वर्षा की एक बूँद भी ना गिरे; अपने बाणों से पंदाल बनाकर सुव्यवस्थित प्रबंध किया अर्जुन ने। खांडव वन के जलने में कोई रुकावट नहीं आयी। इंद्र ने अनेकों उपायों से खांडव वन को जलने से रोकना चाहा, पर उसके उपाय कृष्ण व अर्जुन के सम्मुख विफल होते गये।

उस वन का बहुत समय से रक्षक था तक्षक। उसने जब देखा कि कृष्णर्जुन की सहायता से अग्निहोत्री अपने लक्ष्य की पूर्ति में सफल होकर ही रहेगा तो चुपचाप उस

वन से चला गया। वह कुरुक्षेत्र पहुँचा।

तक्षक का पुत्र अश्वसेन अपनी माँ की आड़ में जब खिसक रहा था तो अर्जुन ने उसे देख लिया। तब उसने तक्षक की पत्नी का सिर काट डाला और अश्वसेन की पूँछ काट डाली। पूँछ के कट जाने पर भी अश्वसेन वहाँ से बच निकला।

तदुपरांत अर्जुन और इंद्र में घमासान युद्ध हुआ। इंद्र, अर्जुन को हरा नहीं पाया। खांडव वन में रहनेवाले कुछ राक्षसों ने भी युद्ध में भाग लिया। उन्हें कृष्ण ने अपने चक्र से मार डाला। मय नामक राक्षस बचकर जब भाग निकलने लगा तो कृष्ण ने उसे मारना चाहा। तब मय ने अर्जुन की शरण माँगी। क्षत्रिय जब किसी को शरण देता है तो अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करता है। यह क्षत्रिय-धर्म है। अर्जुन के इस काम पर कृष्ण क्रोधित नहीं हुआ, बल्कि बहुत ही प्रसन्न हुआ। मन ही मन उसके साहस तथा धर्म-बुद्धि की वाहवाही करने लगा।

अग्निहोत्री ने पंद्रह दिनों तक खांडव वन का दहन किया। उस वन में जितने भी प्राणी थे, जलकर राख हो गये। उनमें से जो बच गये, वे थे तक्षक, उसका पुत्र अश्वसेन, मय, शारज्ञक।

ये शारज्ञक मंदपाल नामक मुनि की संतान थी। मंदपाल ने ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया और दीर्घ अवधि तक घोर तपस्या की। अपनी योगशक्ति के बल पर स्वर्ग गया। किन्तु वह स्वर्ग में सुखी नहीं रह पाया। उसने देवताओं से प्रश्न किया कि जिस स्वर्गलोक में मुझे सब सुख प्राप्त होने चाहिये, क्यों नहीं प्राप्त हुए ?

देवताओं ने प्रत्युत्तर दिया "यद्यपि तुमने तपस्या करके देवऋण तो चुकाया, संतान प्राप्त करके पितरों का ऋण नहीं चुकाया। इसी कारण तुम्हें स्वर्ग में सुख प्राप्त नहीं हो रहा है।"

तब मंदपाल ने सोचा कि पक्षियों को संतान-प्राप्ति शीघ्र होती है। मैं भी क्यों न पक्षी बनूँ। उसने शारज्ञपक्षी का रूप धारण
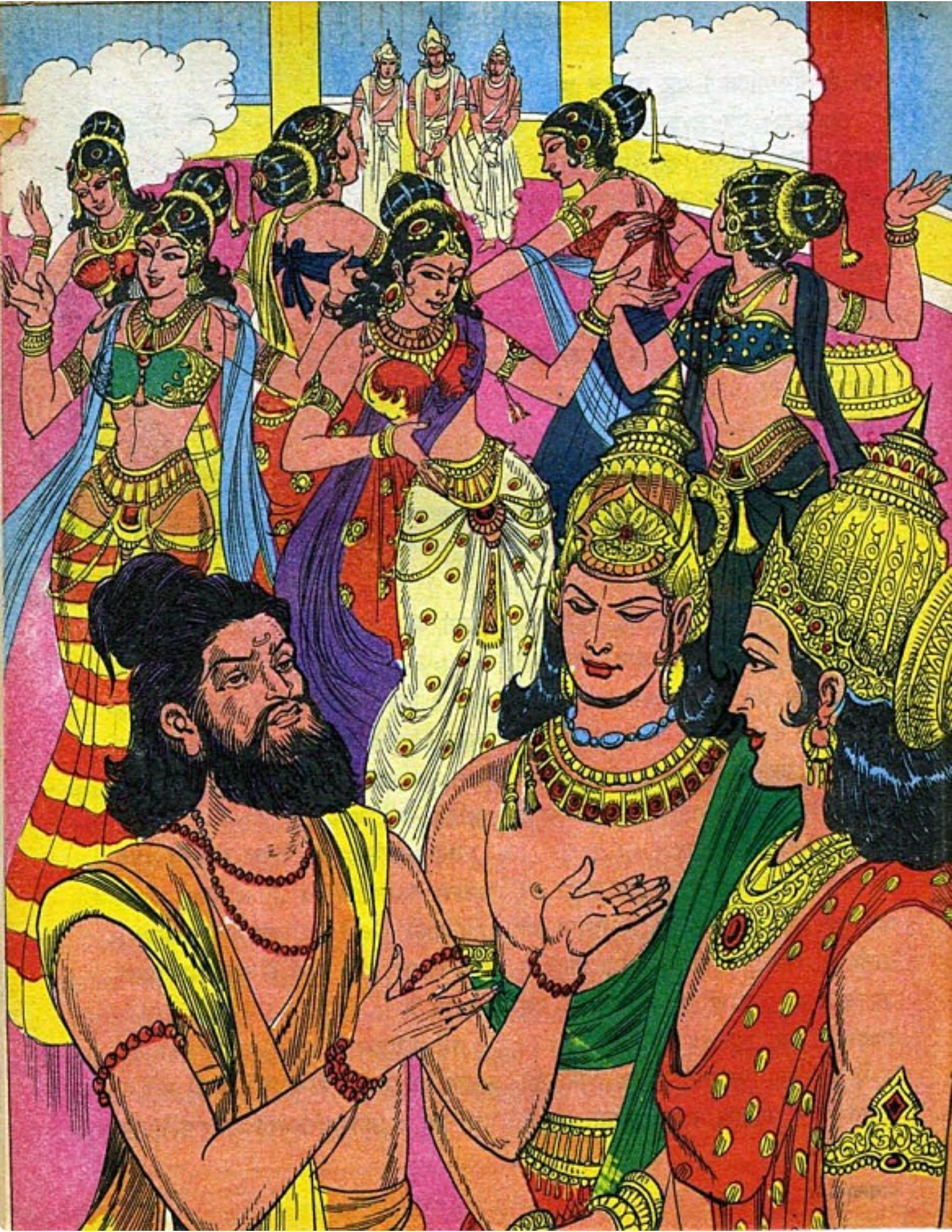
किया और जरिता नामक पक्षी से चार शिशु उत्पन्न किये। फिर वह अपने आश्रम लौटा और लपिता नामक अपनी पत्नी के साथ दांपत्य जीवन बिताने लगा।

इस अवधि में मंदपाल ने एक दिन अग्निहोत्री को देखा, जो खांडव वन का दहन करने निकल पड़ा था। अपनी शक्ति द्वारा उसने अग्निहोत्री का उद्देश्य जाना और उससे कहा "अग्निहोत्री, खांडव वन में मेरी संतान हैं। उन्हें मत मारना।" अग्नि ने अपनी स्वीकृति दी। इस कारण चारों शारङ्गक बच गये।

जो भी हो, खांडव वन पूरा का पूरा जल गया। अग्निदेव की अजीर्ण व्याधि का निवारण हो गया। उसने विजयी कृष्णार्जुन को अपनी कृतज्ञता प्रकट की और चला गया।

इंद्र ने भी कृष्णार्जुन की शूरता की भरपूर प्रशंसा की और समस्त देवताओं के साथ उनके सम्मुख प्रत्यक्ष हुआ। उन्होंने इंद्र को नमस्कार किया। इंद्र ने कहा कि कोई वर माँगो, तो अर्जुन ने दिव्यास्त्र माँगे।

इंद्र ने अर्जुन से कहा "महेश प्रत्यक्ष होंगे। तब मैं तुम्हें दिव्यास्त्र दूँगा।" जाते-जाते इंद्र ने आशीर्वाद दिया कि तुम दोनों का प्यार बना रहे। फिर कृष्णार्जुन यमुना नदी के किनारे अपने विहारस्थल पर लौटे। उनके साथ मय भी आया। मय ने अर्जुन

को प्रणाम करके कहा "महात्मा, आप ही की दया से मैं खांडव वन से बच निकला। अथवा कृष्ण और अग्निहोत्री मेरा दहन किये बिना मुझे नहीं छोड़ते। मैं किस प्रकार से आपका प्रत्युपकार करूँ? मैं राक्षसों का विश्वकर्मा हूँ। इसलिए आप जो चाहें, निर्माण करूँगा और वापस चला जाऊँगा। कहिये, आप क्या चाहते हैं?"

अर्जुन ने कुछ नहीं माँगा। सिर्फ़ इतना ही कहा "तुम्हारा मैत्री-भाव ही मेरे लिए पर्याप्त है।" किन्तु मय ने हठ किया कि कोई निर्माण-कार्य करके ही जाऊँगा। अर्जुन ने कृष्ण की सलाह माँगी। कृष्ण ने मय से कहा "धर्मराज के लिए एक

प्रशस्त सभा का निर्माण करो। वह बहुत सुँदर हो। साथ ही उसका प्रभाव दिव्य हो।''

मय ने अपनी सम्मति दी। कृष्णार्जुन मय सहित इंद्रप्रस्थ लौटे। उन्होंने धर्मराज को खांडव वन के दहन का पूरा विवरण दिया। अर्जुन ने मय को अग्नि से किस प्रकार बचाया, उसके उपलक्ष्य में मय किस प्रकार की सभा का निर्माण करना चाहता है आदि विवरण धर्मराज ने जाना। उसे बड़ी खुशी हुई और मय का योग्य सत्कार किया।

मय ने एक दिन प्रातःकाल मंगलस्नान किया। ब्राह्मणों को पुरस्कार दिये और सभा भवन के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया। यह सभा भवन समतल स्थल पर बनेगा और किसी भी ओर से देखो दस हज़ार बालिश्तों का होगा।

कृष्ण द्वारका के लिए रवाना हो गया। अर्जुन के रथ में ही बैठकर वह गया। पाँडवों ने बहुत दूर तक उसे साथ जाकर उन्हें बिदा किया।

निर्धारित समय के अंदर मय ने सभा का निर्माण किया। बहुत पहले की बात है। विषपर्व नामक राक्षस के लिए उसने सभा का निर्माण करना चाहा। इसी उद्देश्य से उसने बिन्दुसरोवर के तट पर विविध मणिमय पदार्थों को छिपा रखा था। उन वस्तुओं में से वरुण का शंख 'देवदत्त' भी था। मय ने गदा भीम को और शंख अर्जुन को दिया।

सभा के निर्माण की उसकी पद्धति बहुत ही अद्भुत थी। इस भवन में मय ने कुछ सरोवरों का निर्माण किया। उसकी दीवारों में रत्न, डंडों में वैडूर्य, सीढ़ियों में स्फटिक जड़े गये। सोने से कमल, मछलियाँ, कछुए आदि बनाये। जल और धरती के भाग को समान रखा, जिससे उनमें आसानी से अंतर नहीं जाना जा सके।

सभा के सब स्तंभों, दीवारों और चबूतरों में मणि जड़े थे। इस सभा में विविध आकर्षण थे। देखनेवाले भ्रमित हो

जाते थे ।

लोकोत्तर ऐसी सभा का निर्माण करने वाले मय का सत्कार उचित रीति से धर्मराज ने किया और उसे भेज दिया । फिर उसने दस हज़ार ब्राह्मणों को दान दिये, उनकी समाराधना की । उनका आशीर्वाद पाकर भाइयों सहित मय ने सभा में प्रवेश किया ।

कितने ही देशों के राजाओं ने धर्मराज की श्रेष्ठता को स्वीकारा । उसे अनगिनत घोड़े, सुवर्ण आभरण, मणियाँ, सुँदर कन्याएँ, दास-दासियों को भेंट में दिया । जो भेंटें ले आये थे उनमें से अंग, वंग, कलिंग, आँध्र, पुँडक, किरात, मगध, मत्स्या मालव, केकय, करूशा, कांभोज, मद्र, पौंडय आदि देशों के राजा थे । बहुत से ऋषिगण भी वहाँ आये और अनेकों कथाएँ सुनायीं । इस अवसर पर नारद पारिजात, दैवत आदि अपने शिष्यों के साथ सभा में आये । धर्मराज ने भक्तिपूर्वक उनका स्वागत किया । जो भी मय सभा के उद्घाटनोत्सव पर आये, उसे देखकर दंग रह गये । उन्हें लगा कि ऐसा सभा भवन न ही कभी बना और ना ही बनेगा । कला और ऐश्वर्य का यह अद्भुत प्रतीक है । सब कहने लगे कि इंद्रलोक में भी ऐसा भव्य भवन नहीं है ।

नारद ने, धर्मराज से सविस्तार बताया कि राजाओं के क्या-क्या कर्तव्य हैं । उन्होंने दिग्पालकों की सभाओं का वर्णन किया । कहा भी कि राजसूय याग्य करने से स्वर्ग प्राप्त होता है । हरिश्चंद्र जैसे राजाओं ने ऐसा याग्य किया, इसीलिए आज वे इंद्रलोक में हैं । साथ-साथ उन्होंने एक चेतावनी भी दी । चेतावनी यों थी - अगर राजसूय यज्ञ निर्विघ्न चले तो ऐसा युद्ध छिड़ जायेगा, जिसमें अपार जन मृत्युलोक चले जाएँगे ।

यह चेतावनी देते हुए नारद ने धर्मराज से कहा ''राजन्, भली भांति सोचो-विचारो । जो तुम्हें उचित लगेगा, करो ।'' धर्मराज से बिदा लेकर वे द्वारका चले गये ।

# 'चन्दामामा' की ख़बरें

## एक पल की देरी

नूतन वर्ष के आगमन में एक पल की देरी हुई। १९९६ अधिवर्ष है। इसलिए फ़रवरी में जिस प्रकार एक दिन अधिक हुआ, उसी प्रकार 'अटॉमिक आणविक' में दिसंबर ३१ के दिन शास्त्रवेत्ताओं ने एक पल अधिक किया। यों यह नया साल एक पल भर की देरी से आया। तत्संबंधी शास्त्रवेत्ता भूभ्रमण के अनुकूल अटॉमिक-घड़ियों को बदलते रहते हैं। भूमि में चूँकि तीन तिहाई पानी ही है, इसलिए समुद्रों के ज्वार-भाटों के मुताबिक भूभ्रमण में थोड़ा-बहुत अंतर आता रहता है। उस अंतर के अनुसार शास्त्रवेत्ता 'अटॉमिक-घड़ियों' को बदलते रहते हैं।

## मछली में काँच की आँख

हम जैसे ही पानी का नाम लेते हैं, मछली की याद आती है। अमेरीका के नार्थ करोलिना के एक 'मत्स्यागार' की एक मछली की आँख की शल्य-चिकित्सा हुई। उसकी एक आँख चली गई, इसलिए उसके बदले सोने के रंग के कांच की एक आँख लगाई गई। शल्य-चिकित्सा पानी के बाहर ही हुई। गत नवंबर में नार्थ करोलिना के वेटर्नरी-कालेज पशु-चिकित्सालय के लिए जिन साधनों का उपयोग हुआ, उसमें भी बहुत छोटे साधनों का उपयोग हुआ। उस समय मछली को नशीली दवा भी दी गयी।

## पांडा क्लब

पांडा बच्चे के साथ खेलते हुए श्रीजवाहरलाल नेहरू का फोटो सुप्रसिद्ध है। उन्होंने इस 'पांडा' को दिल्ली के अपने त्रिमूर्ति भवन में ही रखा था। इसकी आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। आँखों के चारों ओर काली लक़ीरें होती हैं। शरीर सफ़ेद और काले बालों से भरा हुआ होता है। पाँडा चीन और तिब्बत देशों का है। पिछले १४ नवंबर को नेहरू जन्म-दिवस के अवसर पर 'पांडा क्लब आफ इंडिया' के नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था स्थापित की गयी। छे से सोलहवें साल तक के किशोर ही इसके सदस्य बन सकते हैं। इस क्लब की मद्रास शाखा में क़रीबन सौ सदस्य हैं। नवंबर, २४ को बच्चे जब इकट्ठे हुए तब उन सबने 'जाइंट-पांडा' से हाथ मिलाया। इस संस्था के संस्थापक हैं, टेनिस के प्रमुख खिलाड़ी विजय अमृतराज। उन्होंने सभी सदस्यों को अपनी शुभ कामनाएँ दीं और संस्था के भविष्य के कार्यक्रमों को विस्तार से समझाया। आप भी इस संस्था के सदस्य बनना चाहें तो इस पते पर लिखिये: पांडा क्लब आफ इन्डिया, २, कृष्णमाचारी रोड, नुंगबाकं, मद्रास - ६०० ०३४.

# अर्जुन पेड़

पांडवों में मध्यम अर्जुन अपने पिता की तरह सफ़ेद था। कहते हैं कि इसीलिए इस नाम अर्जुन-पेड़ पड़ा। इस वृक्ष की लकड़ी सफ़ेद होती है, इसलिए कुछ प्रांतों में इसे अर्जुन वृक्ष पुकारते हैं। तमिल में इसे 'वेल्लमुरुदु' कन्नड में 'अराजिना' मलयालम में 'स्वर्णाक्क' तेलुगु में 'मद्दि' असामी में 'सोनारु' बंगाली में 'सांडाल बंडाल्लेट' कहते हैं।

असाम, बंगाल, केरल और दक्षिण कर्नाटिक प्रांतों में ये पेड़ अधिकतर दिखते हैं। ये मुख्यतया नदी तटों तथा गीली ज़मीन के प्रदेशों में पनपते हैं।

लाटिन भाषा में इसे टेर्मिनालिया अर्जुना कहते हैं। इसके फूल कोमल पीले रंग के होते हैं। ये डालों के अंतिम भाग में फूलते हैं।

यह पेड़ मार्च-जून महीनों में फूलता है। कांतियुक्त हरे पत्ते एक-दूसरे के सामने पाये जाते हैं। शीत काल में झड़ने के पहले पत्ते पक्के होकर तांबे के रंग में बदल जाते हैं। यह पेड़ देखने में बहुत ही आकर्षणीय होता है। कभी भी शुष्क नहीं दीखता।

इसकी लकड़ी हल्की होती है, पर बहुत मज़बूत होती है। घर के दरवाज़ों, खिड़कियों तथा कृषि-संबंधी साधनों को बनाने के काम में इसका उपयोग होता है।

हमारे देश के ऋषि : १०

# जनक

विश्वामित्र एक राज्य के राजा थे। उन्होंने तपोमहिमा जानी और राजसिंहासन को त्याग दिया। तपस्या की और
ऋर्षि बने। उत्तरोत्तर वे ब्रह्मर्षि कहलाये गये।

मिथिलाधिपति जनक राजा ही बने रहे। किन्तु ग्राहस्थ्य में भी उन्होंने आध्यात्मिक साधना की। ज्ञान व वैराग्य
अपने जीवन का अंश बनाया। राज्याधिकार ने उनकी आध्यात्मिक साधना में कोई अड़चन नहीं डाली। इसका
रण था, उनमें राजा होने का दंभ न होना। शासन के भार को दैव समर्पण के भाव से एक याग की तरह चलाया
र संभाला। इसीलिए वे कर्मयोगी और राजर्षि के नाम से प्रख्यात हुए। उनकी कीर्ति चहु दिशाओं में व्याप्त हुई।

वाल्मीकि रामायण में राजर्षि जनक एक उदात्त पात्र है। उन्होंने यज्ञ करने की ठानी और जब भूमि में हल चलाने
। तो उन्हें एक सुवर्ण-पेटी में दिव्य तेजस्विता से भरी एक बच्ची मिली। उस कन्या का नाम सीता रखा गया।
होंने उसे बड़े प्यार से पाला-पोसा और बड़ा किया। शिव धनुष को तोड़नेवाले श्रीराम से उसका विवाह रचाया।

जनक महाराज अक़्सर सभा बुलाते और विज्ञों से धर्म और शास्त्रों के बारे में गंभीर चर्चाएँ करते। उनके कुलगुरु
मुनि याज्ञवल्क। उनके साथ जनक की जो चर्चाएँ हुईं, वे तात्विक लोक में प्रसिद्ध हुईं। उनमें से कुछ प्रश्नोत्तरों
यहाँ पढ़ेंगे।

जनक : महात्मा, मनुष्य को मार्ग-दर्शनिवाली कांति क्या है?

याज्ञवल्क : महाराज, सूर्य।

जनक : तो सूर्यास्त के बाद ?

याज्ञवल्क : चाँद कांति प्रदान करता है।

जनक : जब सूरज और चाँद दोनों नहीं होते?

याज्ञवल्क : अग्नि कांति देती है।

जनक : अग्नि भी जब न हो तब?

याज्ञवल्क : वाक्।

जनक : जब वाक् भी ना रहे तो कौन कांति दिखायेगा?

याज्ञवल्क : ऐसे समयों पर 'आत्मा' कांति देती है।

# क्या तुम जानते हो ?

१. वह कौन-सा देश है जो पिछले बारह सालों से अणु-शस्त्र रहित है?
२. भारत राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी शत जयंती कब मनायी?
३. ग्रहों में से परिमाण में सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है?
४. दिल्ली के उस समय के वायसराय निवास-स्थल (वर्तमान राष्ट्रपति भवन) की रूप-कल्पना किसने की?
५. पुराणों के इंद्र की राजधानी क्या थी?
६. रेल-पेटियों को बनानेवाली 'इंटेग्रल कोच फाक्टरी' कहाँ है?
७. यूरोप में बहनेवाली सबसे बड़ी नदी कौन-सी है?
८. डाक-स्टाम्प किस देश में पहले-पहल प्रकाशित हुए?
९. गाँधीजी से स्थापित प्रथम आश्रम का क्या नाम है ?
१०. मानव शरीर का सब से बड़ा अवयव क्या है?
११. हमारे देश की 'हरित क्रांति' की सूचक फ़सल कौन-सी है?
१२. शक वर्ष को प्रवेश करानेवाले राजा कौन थे?
१३. आधुनिक 'इटली पिता' के नाम से विख्यात व्यक्ति कौन हैं?
१४. हमारे देश में भूमि का कोयला किस प्रांत में अधिक मिलता है?
१५. बुद्ध का 'निर्वाण' कहाँ हुआ?
१६. 'ब्लू चिप' क्या है?
१७. वह कौन-सा देश है, जहाँ सिनिमा थियेटर नहीं हैं?
१८. 'क्विट इंडिया' आँदोलन कब शुरु हुआ।

## उत्तर

१. न्यूज़ी लैंड
२. १९८५ में
३. गुरुग्रह
४. सर एड्विन लुटीन्स
५. अमरावती
६. पेरंबूर, मद्रास
७. ओल्गा नदी
८. ग्रेट ब्रिटेन
९. दक्षिण अफ्रीका के डर्बन समीप का फीनेक्स पार्क
१०. कालेय
११. गेहूँ
१२. कनिष्क
१३. ग्यारी बाल्दी
१४. बिहार
१५. कुशी नगर
१६. सक्रम रूप से समृद्धि की ओर बढ़ती हुई सुस्थिर संस्था 'शेयर'
१७. साउदी अरेबिया
१८. १९४२, अगस्त, २

# राक्षस का सौदा

सीतापुर नामक एक गाँव में लल्लू नामक एक ग़रीब था। उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। बड़े लड़के सोम को छोड़कर बाक़ी सब मेहनत करते थे और कमाते थे। फिर भी मुश्किल से उनके दिन कट रहे थे।

सोम एकदम सुस्त था। काम तो बिल्कुल करता ही नहीं था उल्टे तीन आदमियों का खाना खा जाता था। काफ़ी चर्बी छा गयी और बहुत मोटा भी हो गया। ज़्यादातर सोता रहता था। तंदुरुस्ती थोड़ी भी ख़राब हो जाये तो होहल्ला मचा देता था। वैद्य को बुलाना ही पड़ता था। घरवालों की कमाई का अधिक भाग उसकी दवाओं और खाने के लिए ही खर्च होता था।

चंद्रनाथ नामक एक व्यक्ति एक दिन शहर से आया। वह लल्लू का दूर का रिश्तेदार था। लल्लू की हालत देखकर उसने कहा "कब तक यहीं रहकर हड्डी-पसली एक करते रहोगे। यही काम शहर में करोगे तो बहुत-सा धन मिलेगा। आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकते हो।"

चंद्रनाथ का प्रोत्साहन पाकर लल्लू परिवार सहित शहर निकला। वे जंगल में से गुज़र रहे थे। थोड़ी दूर जाने पर रात हो गयी। एक पेड़ के नीचे वे सब बैठ गये और अपने साथ जो खाना ले आये थे, खाने लगे।

सोम को पैदल चलने की आदत नहीं थी। वह बहुत थक गया। भूख ज़ोरों से लग रही थी। खाने की गठरी जैसे ही खोली, लल्लू झपट पड़ा और सबका खाना अकेले ही खा गया। फिर आराम से सोने लगा।

लल्लू अपने बड़े लड़के पर बहुत नाराज़

सुषमा कुलकर्णी

हुआ। उसने उसे पीटना चाहा, पर पत्नी ने उसे रोका। उसने उसे जंगल में ही छोड़कर जाना चाहा तो पत्नी, भाई और बहनों ने ऐसा करने से मना किया।

"बोलो, अब हमारी भूख कैसे मिटेगी? फलों के पेड़ भी कहीं नहीं दिख रहे हैं। पानी पीकर पेट भरने के लिए कोई सरोवर भी नहीं दिखाई दे रहा है। अगर हो भी तो इस अंधेरे में कुछ दिखायी नहीं देगा। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए"? लल्लू ने हताश होकर कहा।

"तुम तो खाने की बात सोच रहे हो। मुझे तो क्रूर जंतुओं का भय है। रात को यहाँ ठहरना असंभव है" लल्लू की पत्नी ने अपना संदेह व्यक्त किया।

क्रूर जंतुओं की बात उठाते ही सब डर गये। सबने निर्णय किया कि रात भर पैदल चलकर ही सही, जंगल पार करेंगे। उन्होंने सोम को जगाने की कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

"एकदम सुस्त है। अच्छा यही होगा कि हम इसे यहीं छोड़ दें और चले जाएँ" लल्लू ने हठ किया। किन्तु माँ, भाई-बहनों ने नहीं माना।

इस बात को लेकर वे चर्चा करने लगे। तब अचानक पेड़ की टहनी से एक गठरी नीचे आ गिरी। उस भारी गठरी को उन्होंने खोला तो उसमें हज़ारों अशर्फ़ियाँ पायीं।

लल्लू ने कहा "इन्हें लेकर सीतापुर लौटेंगे और खेत खरीदकर आराम से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।"

लल्लू की पत्नी ने अपना संदेह व्यक्त किया "पता नहीं, यह धन किसका है। पेड़ पर शायद कोई आदमी होगा।" और कुछ बताने ही वाली थी कि पेड़ की टहनियों से एक आदमी नीचे कूद पड़ा। वह एकदम काला था और मज़बूत भी।

"यह धन मेरा है। मेरी शर्त मानोगे तो यह धन अपना ही समझो" उस काले आदमी ने कहा।

लल्लू ने पूछा "कहो, तुम्हारी क्या शर्त है?"

काले आदमी ने कहा "यहाँ जो हाज़िर हैं, उनमें से किसी एक को मुझे सौंपना होगा।"

"कहो, तुम्हें कौन चाहिये ?" लल्लू ने पूछा।

काले आदमी ने सोम को चुना।

लल्लू ने मन ही मन सोचा कि अच्छा हुआ, इस सुस्त को चुन लिया। उसने उस आदमी की शर्त मान ली।

मगर उसकी पत्नी घबरा गयी। बोली "तुमने क्यों मान लिया? हमें नहीं मालूम, यह आदमी कौन है? इससे पूछना भी तो चाहिये कि हमारे लड़के से इसका क्या काम है।"

काले आदमी ने कड़वे स्वर में कहा "हमारा सौदा पक्का हो गया। इससे बढ़कर और बातें करना मुझे क़तई पसंद नहीं। धन लो और तुरंत यहाँ से चलते बनो।"

"ठीक है, ऐसा ही होगा। पर बताओ तो सही, हमारे सोम का तुम क्या करोगे ?" लल्लू ने पूछा।

"बताऊँगा तो दुखी हो जाओगे। अच्छा यही होगा कि तुम न जानो कि मैं उसका क्या करूँगा।" काले आदमी ने कहा।

लल्लू ने जिद पकड़ी कि हमें मालूम होने पर ही यह सौदा हो सकता है। तब उस काले आदमी ने कहा "मुझे मालूम है कि असली रूप में आने पर मुझे देखकर डर जाओगे। मैं एक राक्षस हूँ। मानव मेरा आहार है। राक्षस होते हुए भी मैं नियमों का पालन करता हूँ। मैं नीतिमान हूँ। अपना आहार खरीदता हूँ और खाता हूँ।"

उसकी बातें सुनते ही लल्लू की पत्नी ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गयी। लल्लू ने कहा कि तुम्हारी रक़म तुम्हें वापस दे दूँगा। राक्षस ने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। तब परिवार के सब सदस्यों ने एक-एक करके कहा कि मुझे ले लो; सोम को छोड़ दो।

राक्षस ने स्पष्ट किया "तुम सब दुबले-पतले हो। तुम्हें खाने से मेरा पेट नहीं भरेगा। मेरी भूख नहीं मिटेगी। यह जवान

तो हट्टा-कट्टा है। चर्बी चढ़ी हुई है। मुझे यह पसंद आया। मुझे यही चाहिये।"

लल्लू के परिवार के सब सदस्य रोने लग गये। राक्षस हँसता हुआ बोला "रोओ, खूब रोओ। तुम्हारी रुलाई से यह जग जायेगा। मैं तो सोते हुए आदमी को नहीं खाता।"

बस, सब ने रोना एकदम बंद कर दिया। राक्षस ने देखा कि सोम अब भी मस्त सो रहा है।

"लगता है कि यह सबेरे तक उठेगा ही नहीं। मेरा तो नियम है कि अंधेरा ख़तम होने के पहले ही खाऊँ।" कहता हुआ राक्षस सोच में पड़ गया।

सबेरा होने पर ही सोम जागेगा। यह उसकी दैनिक आदत थी। लल्लू के परिवार को आश्वासन हुआ कि सोम बच जायेगा।

किन्तु राक्षस ने हार नहीं मानी। वह कोशिशों में लगा रहा। वह जंगल में गया और चार हाथियों को ले आया। वे हाथी भयंकर घोष करते हुए पेड़ के चारों ओर घूमने-फिरने लगे, फिर भी सोम की नींद में वे ख़लल नहीं पहुँचा पाये।

राक्षस एक और बार जंगल में गया और दो शेर ले आया। उनकी पूँछें पकड़कर मरोड़ने लगा। वे उस दर्द को नहीं सह पाये। उनकी चिल्लाहट जंगल भर में गूँजने लगी। फिर भी सोम सोता ही रहा। जागने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह हिला-डुला भी नहीं। राक्षस ने एक और उपाय सोचा। वह दो जंगली बिल्लियों को ले आया और उन दोनों को आपस में लड़वाया। उनकी विकृत चिल्लाहटों से सोम के खुर्राटे भी मिश्रित हो गये।
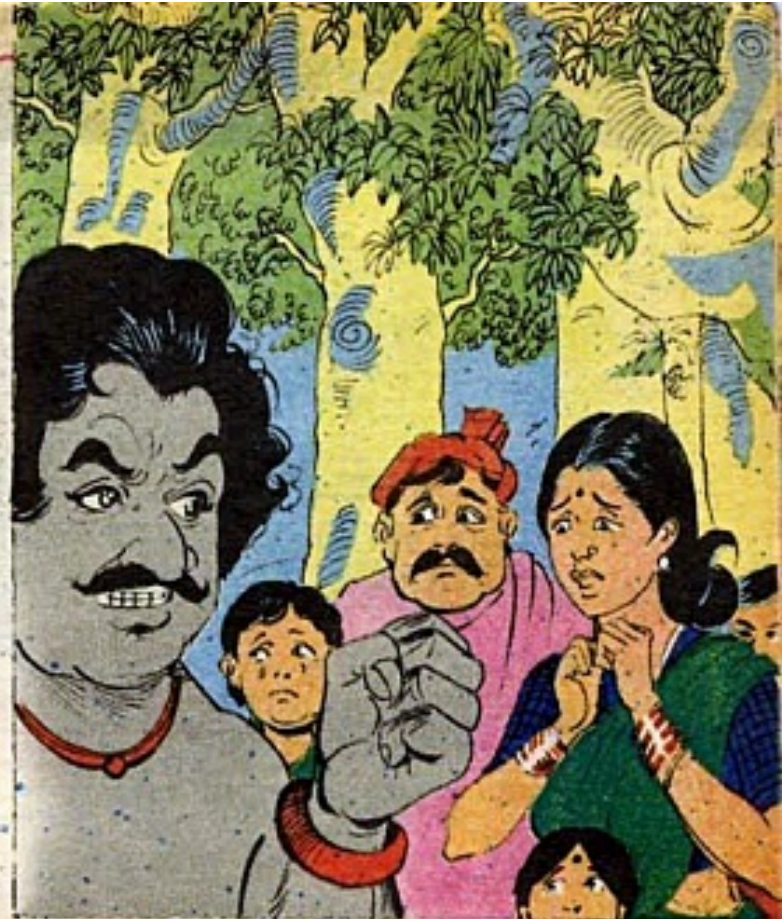
आख़िर राक्षस ने अपना निजी रूप धारण किया और कर्कश स्वर में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। पर क्या फ़ायदा? सोम पर इनका कोई असर नहीं पड़ा।

देखते-देखते सुबह हो गयी। राक्षस ने मानव रूप धारण किया और लल्लू से कहा "तुम लोग अपने गाँव लौटो। एक साल

के बाद मैं तुम्हारे घर आऊँगा। इस पेटू को मेरे हवाले कर दो। ऐसा नहीं करोगे तो मेरी रक़म मुझे लौटा दो।''

''हमें नहीं चाहिये तुम्हारी रक़म। अभी ले लो'' लल्लू की पत्नी ने कहा।

''ऐसा हो ही नहीं सकता। जब एक बार सौदा पक्का हो गया तो पक्का ही समझो। आगे क्या किया जाए, मैंने बता दिया और तुम्हें वह मानना ही पड़ेगा।'' कहकर राक्षस वहाँ से चला गया।

और थोड़ी देर बाद सोम नींद से जागा। माँ ने उसे पूरी बात बतायी और कहा ''तुम कहीं और रहो और साल पूरा हो जाने के बाद घर आना।''

सोम ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''माँ, जब धन नहीं था, तब तुमने मेरी अच्छी देखभाल की। जब धन है तो क्यों मुझे कहीं चले जाने के लिए कह रही हो?''

''तुम साथ रहोगे तो यह रक़म खर्च हो जायेगी। इसे हम सुरक्षित नहीं रख पायेंगे। तब हम तक़्लीफ़ों में फँस जायेंगे। तुम्हारी रक्षा हमारे लिए असंभव हो जायेगी। इसलिए कुछ समय तक कहीं और रहो। राक्षस जब एक साल बाद आयेगा, उसे रक़म वापस दे देंगे और उसकी मुसीबत से छुटकारा पायेंगे। फिर हम सब मिल-जुलकर रह सकते हैं।'' माँ ने उससे गिड़गिड़ाया।

पर सोम ने माँ की बातों की परवाह नहीं की। वह माँ-बाप के साथ ही रहने लगा। सुस्ती को लात मारी और मेहनत करने लगा। इससे उसकी भूख भी कम हो गयी। खाना भी कम खा रहा था और मेहनत भी करने लगा तो बदन की चर्बी घट गयी और वह भी औरों की तरह दुबला-पतला हो गया।

साल के अंत में आये राक्षस ने सोम को देखकर कहा ''यह वह है?'' चिढ़ता हुआ अपनी रक़म लेकर वापस चला गया।

लल्लू के परिवार के सदस्यों ने ठंडी साँस ली और कहा कि राक्षस के सौदे से हमें लाभ ही पहुँचा।

# राजा-राजर्षि

कर्पूर देश का शासक वसंत ईमानदार था। वह अपने को केवल प्रजा का सेवक मात्र मानता था। अतः राजा के सहज सुलभ वैभवों से वह दूर रहता था।

कर्पूर देश का अंतःपुर विशाल था। उसमें पचास कमरे, एक नाट्य-शाला और पाँच स्नान-मंदिर थे। सौ सेवक और पचास परिचारिकाएँ उस भवन को शुभ्र व स्वच्छ रखती थीं। बीस चुस्त व मज़बूत सिपाही रात और दिन भवन की रखवाली के लिए तैनात थे।

वसंत जब राजा बना तब अंतःपुर कला-केंद्र बना दिया गया। वहाँ भिन्न-भिन्न कलाकारों को प्रशिक्षण दिया जाता था। स्वदेश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी सुप्रसिद्ध कलाकार आते थे और युवा कलाकारों को वहाँ नाट्य, संगीत, चित्रलेखन, कविता आदि कलाओं में प्रशिक्षण देते थे।

वसंत क़िले के अंदर ही एक छोटे-से घर में रहा करता था। घर में क़ीमती चीज़ें नहीं होती थीं। महीने भर के लिए जो चीज़ें चाहिये, खरीद लेता था और सुरक्षित रखता था। एक साल होते-होते उसने अपने लिए कुछ सुविधाओं का प्रबंध कर लिया।

इस समय विकल्प देश की राजकुमारी विनीला का स्वयंवर हुआ। वसंत वहाँ गया। उसकी सुँदरता पर रीझकर राजकुमारी विनीला ने उसके गले में माला पहनायी।

वसंत ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा "विकल्प प्रभु से मेरी विनती है कि इस क्षण से ये मेरी धर्मपत्नी है, इसलिए इन्हें बिना राजोचित्त आभरणों के, साधारण वस्त्रों में मेरे साथ भेजिये। भेटें स्वीकार करना मुझे बिलकुल पसंद नहीं।" उसने ये बातें सविनय वधु के पिता से कहीं।

विनीला का बाप उसकी बातों से घबरा

**पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी**

गया । उसने कहा ''संतान को भेंटें देना हमारी रीति है । भला कौन ऐसे माँ-बाप होंगे जो पहली बार अपने ससुराल जाती हुई पुत्री को भेंटें नहीं देंगे । ना मत कहो ।''

''प्रजा-धन को भेंटों के रूप में स्वीकार करना मेरी रीति नहीं है । आपके पास ख़ुद की कमायी हुई कोई धन-संपत्ति हो तो विनीला को भेंट के रूप में दे सकते हैं ।'' वसंत ने कहा ।

विनीला के पिता ने पूछा ''तो तुम्हें अपने पिता से जो भी प्राप्त हुआ, वह सब उन्हीं की कमायी है ?''

''हाँ, विकल्प प्रभू, कर्पूरदेश उन्हीं के शक्ति-सामर्थ्य पर शक्तिवान बन पाया । उस देश को उन्होंने ही मुझे सौंपा । उसके संरक्षण का भार बचपन से ही मैं ही संभालता आ रहा हूँ । बचपन से मैंने इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण पाया । राजा बनने के बाद मैंने केवल राज्यभार को ही संभाला है ना कि राज्यधन को । राजवैभवों को मैंने स्वीकार नहीं किया । प्रजा-सेवक बनकर निर्धारित वेतन मात्र हर महीने लेता हूँ । अपनी आमदनी के अनुसार एक छोटे-से घर में रह रहा हूँ और अपने लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध कर लेता हूँ ।''

यह सुनकर वहाँ उपस्थित सब राजाओं ने उसकी खिल्ली उड़ायी । उन्होंने कहा ''आज से विनीला कर्पूर देश की महारानी नहीं, महासेविका है ।''

विनीला के पिता ने नाराज़ हो कहा ''विनीला को हमने बड़े लाड़-प्यार से पाला है । शान से रहने की उसे आदत पड़ गयी है । वह तुम्हारे साथ रहकर सुख नहीं भोग पायेगी । विनीला को पहले यह सत्य मालूम नहीं था, जिससे उससे ग़लती हो गयी । तुम वैरागी हो, राजर्षि हो । तुमने मेरी बेटी की ज़िन्दगी को शोक से भर दिया । ऐसा करना क्या उचित है?''

विनीला ने अपने पिता को रोका और कहा ''मेरा निर्णय अटल है । मुझसे कोई ग़ल्ती नहीं हुई । पाणिग्रहण होते ही विवाह भी हो गया । पति को स्वीकार लेना मेरा धर्म है ।

मैं अपने पति के साथ जा रही हूँ। मैं अपने को उनके अनुकूल बनाकर जीवन बिताऊँगी या उनके मार्ग पर ही चलकर अपना धर्म निभाऊँगी। मैं आश्वासन देती हूँ कि हम दोनों एक होकर रहेंगे और जीवन का आनंद लूटेंगे। आपको घबराने की कोई ज़रूरत नहीं।''

वसंत और विनीला कर्पूर देश पहुँचे। जब विनीला ने क़िले के अंदर के अपने छोटे-से घर को देखा तो उसका मुख पीला पड़ गया। उसने पूछा ''यह महारानी के निवास के योग्य घर है? इससे बड़ा भवन क्या आपको कहीं नहीं मिला?''

वसंत ने हँसकर कहा ''देश पर पुरुष शासन चलाता है तो वह महाराज कहलाता है। स्त्री हो तो महारानी कहलाती है। तुम महारानी नहीं, महाराज की पत्नी मात्र हो। इस सच्चाई को भुलाना मत। मुझे हर महीने इस घर का किराया चुकाना है। परिचारिकाओं और प्रहरियों को वेतन देना है। अपने वेतन से इससे बड़े घर में रहने की शक्ति मुझमें नहीं है। मैं तो पहले ही तुमसे कह चुका हूँ कि प्रजा के धन पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। उसका उपयोग उन्हीं के लिए होना चाहिये।''

विनीला को पति की बातें नहीं जँचीं। किन्तु सुंदर पति के लिए उसने सब कुछ सह लिया। उस घर में एक दास, एक दासी और एक प्रहरी मात्र थे। उन्हीं से काम चलाती रही और दिन गुज़ारने लगी। एक दिन उसने

जीवन की आदत सी पड़ गयी, परंतु पति की अनुपस्थिति उसे खटकती थी।

वसंत उत्तम कोटि का शासक था। वह मंत्रियों व राज कर्मचारियों को सदा जागरूक रखता था, जिससे सदा प्रजा का हित होता था। समर्थ राजा ही जब कम वेतन पर काम कर रहा है तो उन्होंने और कम वेतन लेकर सेवाएँ कीं।

एक दिन विन्यास नामक एक तपस्वी उनके यहाँ आया। वसंत ने उसका स्वागत-सत्कार किया। उसने वसंत की प्रशंसा की और अपना काम बताया, जिसके लिए वह यहाँ आया था।

विन्यास ने बहुत सालों तक हिमालयों में घोर तपस्या की। अनंत तपोबल पाया। भगवान प्रत्यक्ष हुए और उससे कहा "हे तपोधनी, प्रजा की सेवा ही जिस राजा का ध्येय हो, उस ऐसे राजा की इच्छा पूरी करके लौटो, तब तुम्हें मोक्ष प्रदान करूँगा।"

विन्यास ऐसे राजा को ढूँढते हुए विन्यास निकला। उसे प्रसेनजित नामक एक राजर्षि दिखायी पड़ा।

किन्तु प्रसेनजित ने विन्यास से कहा "तपस्वी, मैं राजर्षि हूँ। मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है। मैं तो सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि मेरा राज्य सदा सुख-शांति से सुशोभित रहे। मैं नहीं जानता कि मेरी यह इच्छा कहाँ तक संभव है। कर्पूर देश का राजा वसंत ही एक ऐसा राजा है, जो मुझसे अधिक ईमानदार

वसंत से कहा "आपकी अनुपस्थिति में ऊब जाती हूँ। खेल भी नहीं खेल पाती। न सहेलियाँ हैं ना ही विलास-कहीं वस्तुएँ। समय बहुत ही नीरस लग रहा है।" उसने अपने दिल की बात बतायी।

"अपने अमूल्य समय को बरबाद मत करो। हमारा ग्रंथालय छोटा है, पर अच्छी पुस्तकें हैं। उन्हें पढ़कर नयी विद्याएँ सीखो। खेल-कूद में लग जाओगी, शान से रहने लगोगी, निरर्थक बातों में अपना वक्त गुज़ारोगी तो मेरे साथ रहते हुए भी कोई लाभ नहीं होगा। तुम मुझसे भी ऊब जाओगी। मुझसे चिढ़ हो जायेगी तुम्हें।" वसंत ने उसे समझाया।

यों एक साल गुज़र गया। विनीला को इस

और उत्तम है। आप उससे मिलिये और किसी निर्णय पर आइये।''

इसी कारण विन्यास, वसंत के पास आया। तपस्वी की बातें सुनकर वसंत थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया। फिर कहा ''मुनिवर, इस देश को सुदृढ़ रखना मेरा धर्म है। इस जिम्मेदारी को अपनी शासन-दक्षता से संभालूँगा। अपनी जिम्मेदारी भगवान को सौंपूंगा नहीं। उनकी कृपा-दृष्टि या उनकी सहायता नहीं माँगूंगा। हाँ, फुरसत के समय विलासमय जीवन बिताने की मेरी भी तमन्ना है। मेरी यह चाह पूरी हो तो मेरी पत्नी भी तृप्त होगी। आप मुझे इसका हक़दार मानें तो मेरी इच्छा पूरी कर सकते हैं।''

विन्यास उसकी बातों पर प्रसन्न हुआ और उसे एक गुड़िया देते हुए कहा ''राजन्, आज से यह गुड़िया तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति करेगी। मगर याद रखना, इसका उपयोग केवल तुम्हीं कर पाओगे।''

आश्चर्य-चकित वसंत ने कहा ''मुनिवर, मैंने तो सोचा था कि आप प्रसेनजित को ही वर देंगे। इसी विश्वास पर मैंने ऐसा वर चाहा। निस्वार्थता में मैं प्रसेनजित से बड़ा नहीं हूँ। वे तो इच्छाओं से परे हैं, तो फिर यह वर मुझे क्यों दे रहे हैं ?''

विन्यास ने मुस्कुराते हुए कहा ''प्रसेनजित राजर्षि है। वह इच्छा रहित है। ऐसे मनुष्य का विलासों से दूर रहना कोई विशेषता तो नहीं है। और तुम? तुम तो विश्वासपात्र समर्थ राजा हो। विलासमयी जीवन से तुम्हें लगाव है, पर इसके लिए तुमने देश के खज़ाने से कुछ भी नहीं लिया। इसीलिए मेरी दृष्टि में तुम उससे भी महान हो। विलासपूर्ण जीवन बिताने की आकांक्षा हो तो राजा होने के नाते, प्रजा का धन खर्च कर सकते थे। इसका तुम्हें हक़ भी है। परंतु तुमने अपने को नियंत्रण में रखा। तुम्हारी ईमानदारी प्रशंसनीय है। इसीलिए तुम इस वर को पाने के हक़दार बने।''

उपरांत वसंत, तपस्वी की दी हुई गुड़िया की सहायता से सुखमय जीवन बिताने लगा। किन्तु उसका मुख्य लक्ष्य था प्रजा की रक्षा और उनका कल्याण। उसके शासन-काल में प्रजा को किसी बात की कमी नहीं थी।

# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, अप्रैल, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

L. Bhavani

Taj Prasad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० फरवरी, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

**चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

---

## दिसंबर, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **असली को दे नक़ली रूप**

दूसरा फोटो : **नक़ली को दे असली रूप**

प्रेषिका : **तमन्ना**

**C/o. पी.के. पटेल, मानिकपुर - पो. ४१६ ५५१ (मध्य प्रदेश)**




Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.


---

PARLE

कभी न हम भूलें जी... जीते जी

जीने की राह यही है सही

जीवन की इन राहों में हर कदम है इम्तिहान. किन राहों को अपनाएंगे, किन से मुंह मोड़ेंगे, यही हमारी पहचान. बिना चाह के, बिना आस के, किसी का हाथ बंटाना, यूं ही राह चलते, किसी के काम आना. इसी को कहते सच्चाई से जीना. कभी न हम भूलें जी . . . जीते-जी, जीने की राह यही है सही.

बरसों से भारत के सबसे ज्यादा चाहे जाने वाले बिस्किट.

• स्वादभरे, सच्ची शक्तिभरे •

everest/95/PPL/109hn